

बल, पराक्रम, भाई-बहनों का भाव है तृतीय भाव



पं योगेश पौराणिक
ज्योतिषाचार्य (इंजी)

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

जन्म कुंडली का तीसरे भाव से व्यक्ति के बल, पराक्रम, दाहिनी भुजा और छोटे भाई-बहन तथा आजिविका का विचार किया जाता है। दूसरे और तीसरे भाव में बैठे ग्रहों की संख्या और प्रभाव तय करता है कि जातक के कितने भाई-बहन होंगे और जातक में बल पराक्रम कितना होगा। इसके अलावा जातक के पहनावे, कंठ स्वर तथा किस प्रकार के भोजन में रुचि रखने वाला होगा इसका विचार तीसरे भाव किया जाता है।

तृतीय भाव का कारक ग्रह मंगल है तथा
काल पुरुष की कुंडली के तीसरे भाव में स्थित राशि आती है जिसके राशि पति बुध है इसलिए तीसरे भाव पर मंगल के साथ साथ बुध का प्रभाव भी देखने मिलता है।

जन्म कुंडली के तीसरे भाव में प्रत्येक ग्रह का प्रभाव जाने
सूर्य : कुंडली के तीसरे भाव में सूर्य होने से जातक अत्यन्त पराक्रमी, आत्मबली होता है तथा उसकी उच्च पदाधिकारियों से अधिक मित्रता होती है। किंतु जातक का छोटे भाई बहनों से मनमुटाव बना रहता है। यहां बैठा सूर्य सोना, ऊन, दवा, धी गुड़ आदि के व्यापार में सफलता दिलाने वाला होता है। यदि सूर्य कमजोर हो तो प्रभाव में कमी आती है।

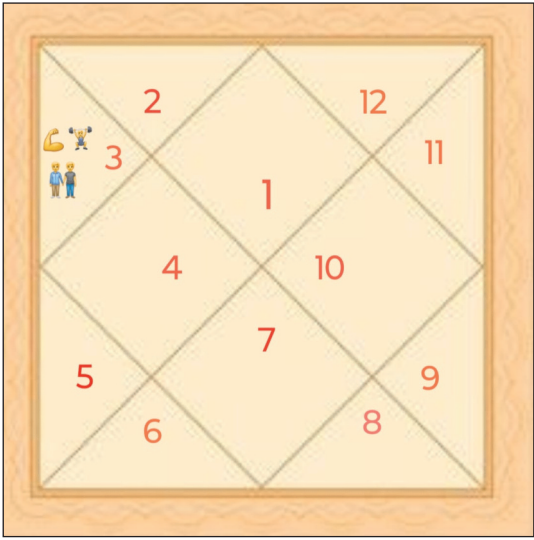
चंद्रमा: कुंडली तीसरे भाव में चंद्र होने से जातक कला प्रेमी किंतु कल्पनाशील होता है। ऐसा जातक लेखन में बहुत रुचि रखता है। ये यात्रा के शौकीन होते हैं और इनकी बहनों की संख्या अधिक हो सकती है। भावनात्मक प्रवृत्ति के होने के कारण एक अच्छे मध्यस्थ बनकर काम करते हैं। यहां बैठा चन्द्र जातक को मोती, शंख, तेल, शराब, कंस्ट्रक्शन का मटेरियल आदि के व्यापार में सफलता दिलवाने वाला होता है।

मंगल: जन्म कुंडली के तृतीय भाव में मंगल जातक को अत्यंत पराक्रमी और साहसी बनाता है यहां बैठा मंगल जातक के अंदर अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा शक्ति का संचार करता है यही कारण है कि ये अपने बल पर ही सारे काम बना पाते हैं।

अत्याधिक जोशीला स्वभाव होने के कारण कभी कभी लापरवाही भी कर जाते हैं। मंगल के प्रभाव से छोटे भाई बहनों से कम लगाव रहता है किंतु इनके भाई बहन भी इन्हीं की तरह ऊर्जावान और साहसी प्रकृति के होते हैं। तीसरे भाव का मंगल होने से जातक मशीनरी, सेना, पुलिस, अस्त्र शस्त्र, बिजली आदि में सफलता प्राप्त करता है।

बुध: कुंडली के तीसरे भाव में बुध होने से जातक कुशल संचारक, समाजसेवी और बुद्धिमान बनता है। इन्हें दूसरों के साथ जल्दी घुल मिल जाना स्वाभाविक रूप से आता है। ये व्यापार, मीडिया और गणित के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं।

तीसरे का बुध जातक के अंदर सौम्य और मनमोहक वाणी प्रदान करता है जातक काम निकालने में चतुर होता है। भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहते हैं।



गुरु : जन्म कुंडली के तीसरे भाव में देव गुरु का होना अंत्य शुभकारी माना जाता है ऐसा जातक ज्ञानी, संस्कारी, सभ्य तथा बुद्धिमान होता है। इनकी वाणी गंभीर होती है। जातक के भाई बहन भी धार्मिक और संस्कारी होते हैं। गुरु की नवम भाव पर दृष्टि होने से इनकी धार्मिक यात्रा होती रहती है। इन्हें जीवन साथी भी कुछ आध्यात्मिक प्रवृत्ति का मिलता है। यहां बैठा गुरु जातक को शिक्षक, धर्मोपदेशक, न्यायाधीश, वकील तथा खनिज के व्यापार में सफलता दिलाने वाला होता है।

शुक्र: तीसरे भाव का शुक्र जातक को कला और संगीत प्रेमी बनाता है। ऐसे जातक सौंदर्य प्रेमी और सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित होते हैं। भाई बहनों से भी इनकी खूब पटती है। विपरीत लिंग के लोगो से अधिक लगाव रहता है। तीसरे में शुक्र होने से जातक ज्वेलरी, दूध, हाथी, लोहा और ज्योतिष जैसे व्यापार में सफलता प्राप्त करता है।

शनि: तीसरे भाव में शनि होने से जातक को मेहनती और प्रतिष्ठावान बनाते हैं।

जातक संचर्ष के बाद सफलता हासिल करता है। जातक गंभीर प्रवृत्ति का होगा और इनके छोटे भाई बहन की संख्या या तो कम होगी या फिर नहीं होंगे। इन्हें मेहनत वाले काम ही पसंद आयेंगे। इनकी मित्रता अनुभवी लोगों से अधिक रहेगी।

दाहिनी भुजा पर कट या तिल का निशान रहेगा।

राहु: जन्म कुंडली में राहु तीसरे भाव में होने से जातक असाधारण रूप से पराक्रमी और साहसी होता है। ऐसा जातक विदेश से या सोशल मीडिया के माध्यम से खूब धन कमाता है। इन्हें आधुनिक तकनीक का सही उपयोग करना आता है। इनकी लंबी दूरी की यात्रा या विदेश यात्रा होती रहती है। इन्हें जोखिम उठाना अत्यंत पसंद होता है। इनके दाहिनी भुजा पर तिल या कट का निशान अवश्य होता है।

केतु : कुंडली में तीसरे भाव का केतु जातक को पराक्रमी किंतु जिज्ञासु और एकाकी बनाता है। जातक अपने भाई बहनों से कम लगाव रखता है। ऐसा जातक आध्यात्मिक प्रवृत्ति का होता है। लेकिन ऐसे जातक कौशल और अनुभवी खूब होते हैं। इनकी इन्ट्यूशन पावर भी अधिक होती है। परखने में ये कुशल होते हैं। इन्हें जंगल और पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रा करना अधिक पसंद होता है।



आपके दिन की शुरुआत,

पारुल भटनागर के साथ

विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट

परिवहन विशेष News

अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 06 अक्टूबर 2026

दिन का अंक: 9 | पूर्णता, करुणा, क्षमा, सेवा और सार्थक समापन का दिन।

मूलांक 1 | नई शुरुआत से पहले अधूरे काम पूरे करें
आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति अगले लक्ष्य की ओर बढ़ने की है, लेकिन आज पहले चल रहे काम पूरे करना जरूरी है। किसी लंबित कार्य या बातचीत को परिपक्वता से समाप्त करें। सोच-समझकर किया गया समापन मजबूत नई शुरुआत के लिए जगह बना सकता है।

मूलांक 2 | जो भावनात्मक रूप से पूरा हो चुका है उसे छोड़ें
आज कोई पुरानी चिंता, स्मृति या रिश्ते का पैटर्न अधिक गहराई से महसूस हो सकता है। शांत बातचीत यह समझने में मदद करेगी कि किस विषय को स्वीकार करना है, न कि लगातार चिंता करनी है। दूसरों के प्रति करुणा रखें, पर अपनी भावनात्मक सीमाएं न छोड़ें।

मूलांक 3 | अभिव्यक्ति से प्रेरणा और समापन दें
आज आपके शब्दों का भावनात्मक प्रभाव विशेष हो सकता है। लेखन, शिक्षण, मार्गदर्शन या सार्थक चर्चा समझ और समापन ला सकती है। अपनी रचनात्मकता को उद्देश्यपूर्ण दिशा दें और बहुत सारे विचारों में ऊर्जा न बिखेरें।

मूलांक 4 | व्यावहारिक जिम्मेदारियां सावधानी से पूरी करें
दस्तावेज, धन, घर या अश्रू के काम आपका ध्यान मांग सकते हैं। आपका व्यवस्थित स्वभाव इन्हें प्रभावी ढंग से पूरा करने में मदद करेगा। यदि कोई व्यवस्था या दिनचर्या अपना उद्देश्य पूरा कर चुकी है तो केवल आदत के कारण उसे पकड़े न रहें।

मूलांक 5 | अगले अनुभव के लिए स्थान बनाएं
आज बदलाव, यात्रा या नए अनुभव की इच्छा हो सकती है, लेकिन पहले उन प्रतिबद्धताओं को पूरा करें जिन्हें अभी आपका ध्यान चाहिए। पुरानी जिम्मेदारी पूरी करने से ऊर्जा मुक्त होगी। केवल उत्साह के लिए बदलाव के बजाय सार्थक परिवर्तन चुनें।

मूलांक 6 | करुणा भावनात्मक समापन ला सकती है
परिवार और रिश्तों में क्षमा, समझ या परिपक्व बातचीत लाभ दे सकती है। देखभाल करें, लेकिन हर व्यक्ति की हर समस्या हल करने की जिम्मेदारी न लें। स्वस्थ समापन किसी रिश्ते को मजबूत कर सकता है या अनुपयोगी विषय को शांति से छोड़ने में मदद कर सकता है।

मूलांक 7 | चिंतन अनुभव का सबक दिखाएगा
शांत समय हाल के अनुभव का गहरा अर्थ समझने में मदद कर सकता है। अध्ययन, ध्यान या आध्यात्मिक चिंतन महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि देगा। जिसे बदला नहीं जा सकता उसे स्वीकार करें और भावनात्मक बोझ के बजाय उससे मिली सीख को आगे ले जाएं।

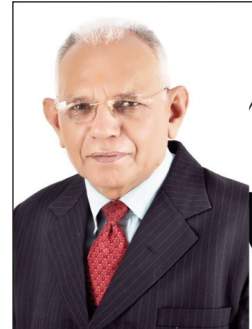
मूलांक 8 | जिम्मेदारियां ईमानदारी से पूर्ण करें
करियर और धन से जुड़े मामलों में समापन, जवाबदेही या सावधानी से निपटारा जरूरी हो सकता है। लंबित भुगतान, प्रतिबद्धताओं और जिम्मेदारियों की समीक्षा करें। शक्ति संघर्ष से बचें; नैतिक समापन और अनुशासित कार्य आपकी प्रतिष्ठा और दीर्घकालिक स्थिति की रक्षा करेंगे।

मूलांक 9 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से समर्थित है
आज का अंक साहस, करुणा, सेवा और पूर्णता के साथ गहरा सामंजस्य बनाता है। महत्वपूर्ण काम पूरे करें, अनावश्यक टकराव छोड़ें और जहां संभव हो क्षमा करें। आज सचेत रूप से पूरा किया गया अध्याप अगले चरण के लिए मूल्यवान स्थान बना सकता है।

कॉल / व्हाट्सएप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vedicodes.in | @vedicodes

Vedicodes - Your vibrations... our solutions

“रामानुजाचार्य: भक्ति और ज्ञान का संगम”



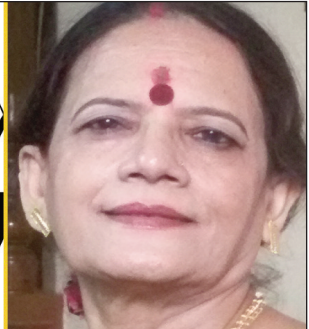
SWAR KATHA

स्वर कथा

© Intosh

SANTOSH KUMAR SHARMA
9811182144

@SWARKATHAINDIA



Dr INDU SHARMA
9899408386

भारत के उन महान संतों पर आधारित लेखों की श्रृंखला में आपका स्वागत है, जिन्होंने अपने विचारों से वैदिक दर्शन को समृद्ध किया। 'स्वर कथा' के पिछले लेख में हमने अद्वैत दर्शन के प्रमुख प्रतिपादक 'आदि शंकराचार्य जी' के बारे में चर्चा की थी। इस लेख में हम भारत के महानतम ऋषियों में से एक, शाश्वत गुरु और 'विशिष्टाद्वैत' के प्रतिपादक 'रामानुजाचार्य' के जीवन और उनके समय के बारे में चर्चा करेंगे।

रामानुजाचार्य को 'इलया पेरुमल' (तमिल में जिसका अर्थ है 'अजेय पेरुमल' या 'ईश्वर') के नाम से भी जाना जाता है।

रामानुज (जन्म लगभग 1017, श्रीपेरंबदूर, भारत - मृत्यु 1137, श्रीरंगम) दक्षिण भारतीय ब्राह्मण धर्मशास्त्री और दार्शनिक थे, और हिंदू धर्म में भक्ति परंपरा के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक थे। लंबी तीर्थयात्रा के बाद, रामानुज श्रीरंगम में बस गए, जहाँ उन्होंने मंदिर पूजा-पद्धति को व्यवस्थित किया और भगवान विष्णु तथा उनकी पत्नी श्री (लक्ष्मी) के प्रति भक्ति के सिद्धांत का प्रचार करने के लिए केंद्र स्थापित किए। उन्होंने तीन

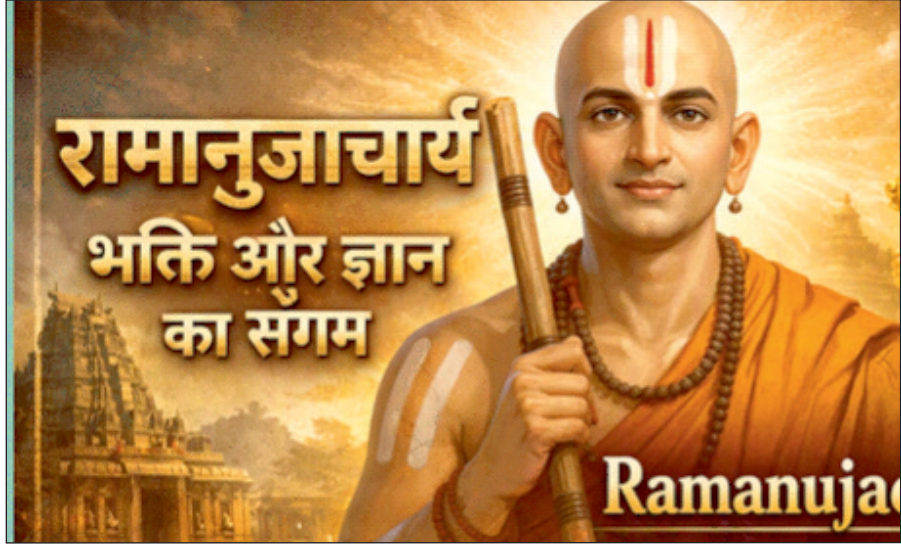
प्रमुख भाष्यों (व्याख्याओं) के माध्यम से भक्ति (भक्तिपूर्ण पूजा) के अभ्यास के लिए एक बौद्धिक आधार प्रदान किया: *वेदार्थ-संग्रह* (वेदों पर, जो हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं), *श्री-भाष्य* (ब्रह्म-सूत्रों पर), और *भगवद-गीता-भाष्य* (भगवद गीता पर)।

उनका जन्म दक्षिण भारत में हुआ था, जो अब तमिलनाडु राज्य (पहले मद्रास) है। उन्होंने कम उम्र में ही धार्मिक झुकाव के लक्षण दिखाए और उन्हें शैक्षणिक के लिए कांची (कांचीपुरम) भेजा गया। कांची के उन शिक्षक यादवप्रकाश थे, जो 8वीं सदी के प्रसिद्ध दार्शनिक शंकर द्वारा प्रतिपादित वेदांत की अद्वैत (non-dualist) प्रणाली के अनुयायी थे। रामानुज की गहरी धार्मिक प्रकृति का जल्द ही उस सिद्धांत से टकराव हो गया जिसमें व्यक्तिगत ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था। अपने गुरु से विवाद के बाद, उन्हें भगवान विष्णु और उनकी पत्नी श्री के दर्शन हुए और उन्होंने उसी जगह पर रोज पूजा-अर्चना शुरू कर दी जहाँ उन्हें उनके दर्शन हुए थे।

वे कांची के वरदराज मंदिर में पुजारी बने। वहाँ उन्होंने यह सिद्धांत

समझाया कि जो लोग जन्म-मरण के चक्र से पूरी तरह मुक्ति (*मोक्ष*) पाना चाहते हैं, उनके लिए लक्ष्य कोई निराकार *ब्रह्म* नहीं, बल्कि साकार ईश्वर—विष्णु—के रूप से प्रकट *ब्रह्म* है। कांची और श्रीरंगम (जहाँ वे रंगनाथ मंदिर से जुड़े थे) में उन्होंने यह शिक्षा दी कि साकार ईश्वर की पूजा और आत्मा का उनसे मिलन उपनिषदों के उन सिद्धांतों का जरूरी हिस्सा है जिन पर वेदांत प्रणाली आधारित है; इस तरह, वैष्णवों और भगवतों (विष्णु के उपासक और पक्के भक्त) की शिक्षाएँ धर्म-विरुद्ध नहीं हैं। ऐसा करके, उन्होंने श्रीरंगम में अपने पूर्ववर्ती यमुनाचाचार्य की शिक्षाओं को आगे बढ़ाया, जिनसे वे अपनी माँ के वंश के जरिए जुड़े हुए थे। उन्होंने अपने तीन मुख्य भाष्यों (टीकाओं) में इस सिद्धांत को स्पष्ट किया।

कई हिंदू विचारकों की तरह, उन्होंने भी एक लंबी तीर्थयात्रा की। वे रामेश्वरम (एडम ब्रिज का हिस्सा) से पश्चिमी तट होते हुए बद्रीनाथ—पवित्र गंगा का उद्गम स्थल—गए और पूर्वी तट से वापस लौटे। परंपरा के अनुसार, बाद में उन्हें भगवान शिव के अनुयायी चोल



राजा कुलोत्तुंग के विरोध का सामना करना पड़ा और वे पश्चिम में मैसूर चले गए। वहाँ, उन्होंने कई जैनियों और होयसल राजा बिट्टीदेव को अपना अनुयायी बनाया; इसके परिणामस्वरूप 1099 में मेलकोटे (आज के कर्नाटक में) शहर की स्थापना हुई और सेल्वा पिल्लई (संस्कृत: संपत्तकुमार, विष्णु के एक रूप का नाम) को समर्पित एक मंदिर बनाया गया। 120 साल बाद वे श्रीरंगम लौटे, जहाँ उन्होंने मंदिर में पूजा-अर्चना की व्यवस्था की और अपने सिद्धांत के प्रचार-प्रसार के लिए 74 केंद्र स्थापित किए। परंपरा के अनुसार, 120 साल की ज़िंदगी जीने के बाद 1137 में उनका निधन हो गया।

दर्शनशास्त्र में रामानुज का मुख्य योगदान इस बात पर जोर देना था कि परम सत्य की खोज में तर्कपूर्ण सोच जरूरी है, यह कि दिखाई देने वाली दुनिया असली है और उससे सही ज्ञान मिलता है, और यह कि रोजमर्रा की ज़िंदगी की जरूरतें न तो नुकसानदेह हैं और न ही आत्मा के जीवन के विरोधी हैं।

इस बात पर जोर देने में वे शंकराचार्य के विरोधी थे; उन्होंने शंकराचार्य की कड़ी आलोचना की और धर्मग्रंथों की उनकी व्याख्या पर सवाल उठाए। वेदांत प्रणाली को मानने वाले दूसरे लोगों की तरह, रामानुज भी मानते थे कि किसी भी वेदांत प्रणाली का आधार तीन श्शुरुआती बिंदु होना चाहिए: उपनिषद, ब्रह्म-सूत्र (उपनिषदों के तथ्यों का संक्षिप्त निवरण), और भगवद गीता—जो भगवान कृष्ण और उनके मित्र अर्जुन के बीच का संवाद है। हालाँकि उन्होंने किसी एक उपनिषद पर कोई टीका नहीं लिखी, लेकिन उन्होंने अपनी पहली बड़ी रचना, *वेदार्थ-संग्रह* (हवेदों के अर्थ का सारांश) में उनकी व्याख्या करने के तरीके के बारे में विस्तार से बताया। इस सामग्री का बहुत कुछ हिस्सा ब्रह्म-सूत्र पर उनकी टीका, *श्री-भाष्य* में भी मिलता है, जिसमें उनके पूरी तरह से विकसित विचार पेश किए गए हैं। भगवद गीता पर उनकी टीका, *भगवद-गीता-भाष्य*, बाद के समय की है।

हालाँकि वेदांत के विचारों में रामानुज का योगदान बहुत महत्वपूर्ण था, लेकिन एक धर्म के तौर पर हिंदू धर्म की दिशा पर उनका प्रभाव और भी ज्यादा रहा है। *भक्ति* (ईश्वर के प्रति समर्पण) के तत्व को शामिल करके... इसने भारत में अपनी जगह बनाई और धार्मिक सोच और रीति-रिवाजों पर गहरा असर डाला। रामानुज का नजरिया तीन अलग-अलग चीजों की असलियत को मानता है: जड़ पदार्थ (matter), आत्मा और ईश्वर। शंकराचार्य और उनसे पहले के वेदांत की तरह, वे भी *अद्वैत* (गैर-द्वैतवाद)—यानी इन तीनों के बीच एक परम एकता—के विचार को मानते हैं; लेकिन उनके लिए, यह गैर-द्वैतवाद ईश्वर पर लागू होता है, जो जड़ पदार्थ और आत्मा से 'विशिष्ट' (यानी श्रृणों वाला या अलग पहचान वाला) है; इसलिए, उनके सिद्धांत को *विशिष्टाद्वैत* (इतिविष्ट गैर-द्वैतवाद) कहा जाता है, जो शंकराचार्य के बिना-गुणों-वाले गैर-द्वैतवाद से अलग है। ब्रह्मांड के

बारे में उनकी जैविक सोच के केंद्र में शरीर और आत्मा की मिसाल है: जैसे शरीर आत्मा को विशिष्ट बनाता है—उससे अलग कोई अस्तित्व न होने पर भी अलग बना रहता है—वैसे ही जड़ पदार्थ और आत्मा ईश्वर का शरीर बनाने हैं, जो ईश्वर से स्वतंत्र अस्तित्व न रखते हुए भी उन्हें विशिष्ट बनाते हैं। इस तरह, मानव आत्मा का लक्ष्य ईश्वर की सेवा करना है, ठीक वैसे ही जैसे शरीर आत्मा की सेवा करता है। ईश्वर से अलग कोई भी चीज उनका ही एक अंश है, जो उनकी पूर्ण सत्ता से निकली है। पूरी दिखाई देने वाली दुनिया ईश्वर की महिमा (*विभूति*) का ही रूप है, और इसकी असलियत को कम करना उनकी महिमा को कम करना है। रामानुज ने कर्म-कांड को ईश्वरीय पूजा में बदल दिया, और ध्यान के रास्ते को ईश्वर के गुणों के लगातार, प्रेमपूर्ण चिंतन में बदल दिया—यह प्रक्रिया *भक्ति* (ईश्वर-प्रेम) के अधीन है, जो पूरी तरह से महसूस की गई भक्ति है और जिससे ईश्वर की प्राप्ति होती है। नतीजतन, मुक्ति का मतलब सिर्फ शरीर के बंधनों से आजाद होना नहीं है, बल्कि ईश्वर के बारे में सोचने की एक सकरात्मक खोज है; ईश्वर को उनके स्वर्ग, वैकुण्ठ में अपनी पत्नी और सेवकों के साथ विराजमान दिखाया गया है। रामानुज का सिद्धांत, जिसे बाद की पीढ़ियों ने और विकसित किया, आज भी दक्षिण भारत के ब्राह्मण समुदाय—श्री वैष्णवों—की पहचान को परिभाषित करता है। वे आगे चलकर दो उप-संप्रदायों में बंट गए: उत्तरी (वडकलई) और दक्षिणी (तेनकलई)। इन दोनों विचारधाराओं के बीच मतभेद का मुख्य कारण ईश्वरीय कृपा का स्वरूप है। वडकलई संप्रदाय—जो

रामानुज की मूल सोच का ज्यादा बारीकी से पालन करते हैं—का मानना है कि ईश्वर को पाने की ईंसानी कोशिश में ईश्वरीय कृपा बेशक काम करती है, लेकिन इससे ईंसानी कोशिश की जरूरत खत्म नहीं हो जाती। इसके उलट, थेनकलई संप्रदाय का मानना है कि ईश्वरीय कृपा ही सबसे अहम है, जिसके लिए ईंसान की तरफ से बस एक ही चीज की जरूरत होती है: ईश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पण (*प्रपत्ति*)।

श्रीपेरंबदूर में रामानुज के जन्मस्थान पर अब एक मंदिर है और वहाँ एक सक्रिय *विशिष्टाद्वैत* समुदाय मौजूद है। उनके बताए सिद्धांत आज भी एक जीवंत बौद्धिक परंपरा को प्रेरित करते हैं, और जिन धार्मिक रीति-रिवाजों पर उन्होंने जोर दिया था, वे दक्षिण भारत के दो सबसे अहम वैष्णव तीर्थ स्थलों—श्रीरंगम (तमिलनाडु) में रंगनाथ मंदिर और तिरुपति (आंध्र प्रदेश) में वेंकटेश्वर मंदिर—के केंद्र में हैं।

आज के लिए बस इतना ही। अगले लेख में हम भारत के एक और महान ऋषि के जीवन और उनके समय के बारे में चर्चा करेंगे। अगर पाठक सनातन धर्म के दर्शन में रुचि रखते हैं, तो वे “Swar Katha” YouTube चैनल को सब्सक्राइब कर सकते हैं।

सौजन्य: ‘Swar Katha’ अगर आप भारतीय दर्शन में रुचि रखते हैं, तो कृपया नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से जुड़ें:
<https://www.youtube.com/channel/UCb351EcXmZvQtab5nY6uw0A>
@SwarStories
या @SWARKATHAINDIA

विकसित भारत के सपने को पूरा करने के लक्ष्य में कदमताल करें युवा : दिनेश कौशिक

नमो सेवा-अनकही कहानियां-नुककड़ नाटकों से दिया नशा मुक्ति और जनसेवा का संदेश



परिवहन विशेष न्यूज

‘बहादुरगढ़ क्षेत्र में सेवा संकल्प अभियान’ के तहत गांवों व शिक्षण संस्थानों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बहादुरगढ़, 5 अक्टूबर
डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे ‘सेवा संकल्प अभियान’ के

तहत ‘नमो सेवा अनकही कहानियां’ मॉड्यूल में सोमवार को उपमंडल क्षेत्र में विभिन्न गांवों व शिक्षण संस्थानों में नुककड़ नाटक आयोजित किए गए। कलाकारों ने विकसित भारत 2047, नशा मुक्ति, सामाजिक समरसता और जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रति लोगों को जागरूक किया।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लडरावण में भाजपा नेता दिनेश कौशिक ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति भी जागरूक होना चाहिए। उन्होंने कहा कि विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने में युवा शक्ति अपना योगदान दें। उन्होंने कहा

कि नशे से दूर रहकर युवा अपने भविष्य को बेहतर दिशा दें और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूकता फैलाएं। वहीं राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पालेराव शर्मा ने छात्राओं से नशे से दूर रहकर स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की अपील की। राजकीय महिला महाविद्यालय में नगर

परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी ने छात्राओं से सामाजिक जागरूकता फैलाने और पात्र लोगों तक सरकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाने का आह्वान किया। गांव आसीदा टोडरान आईटीआई में भाजपा नेता संजय जून ने युवाओं से कौशल व प्रतिभा का सकारात्मक

उपयोग करने और नशे से दूर रहने की अपील की। गुभाना में आयोजित कार्यक्रम में भाजपा नेता अमित ने ग्रामीणों व युवाओं से नशे से दूर रहने और सामाजिक बुराईयों के खिलाफ जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। वहीं गांव रोहद में कार्यक्रम के दौरान नकुल चौपड़ा, उमेश मान व विक्रम ने

युवाओं को सकारात्मक दिशा देने और आपसी भाईचारा बनाए रखने का संदेश दिया। कार्यक्रमों में कलाकारों ने नुककड़ नाटकों के माध्यम से ‘नशा मुक्ति हरियाणा’ का संदेश दिया तथा केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी आमजन को दी।

सेवा संकल्प अभियान- ग्रामीणों के लिए फायदेमंद साबित हो रहे सेवा सेतु कैंप

‘आंगन मिलन सेवा’ के दूसरे दिन महिलाओं और बच्चों ने उत्साह से लिया भाग, 8343 लाभार्थी हुए लाभान्वित

बहादुरगढ़, 05 अक्टूबर
जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न मॉड्यूल में गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। सोमवार को ‘आंगन मिलन सेवा’ मॉड्यूल के अंतर्गत खंड बहादुरगढ़ ग्रामीण-एक के आंगनवाड़ी केंद्रों पर तीन दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन विभिन्न जागरूकता गतिविधियां एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस दौरान महिलाओं एवं बच्चों को पोषण, स्वस्थ खान-पान, बच्चों की वृद्धि एवं विकास तथा स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक किया गया।

दूसरे दिन 8343 लाभार्थियों ने लिया कार्यक्रम में भाग



महिला एवं बाल विकास विभाग की डीपीओ नेहा दहिया ने बताया कि आंगनवाड़ी केंद्रों पर आयोजित गतिविधियों के दौरान लाभार्थियों से संवाद किया गया और बच्चों को उचित पोषण, वृद्धि एवं विकास तथा स्वस्थ जीवनशैली के महत्व की जानकारी दी गई। गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के लिए संतुलित और पौष्टिक आहार को लेकर भी जागरूक किया गया। उन्होंने बताया

कि खंड बहादुरगढ़ ग्रामीण-एक के विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित कार्यक्रमों में कुल 8343 लाभार्थियों ने सहभागिता की। महिलाओं को सरकारी योजनाओं की दी जानकारी कार्यक्रम के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग की टीमों ने महिलाओं के कल्याण से जुड़ी विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी भी दी। इनमें प्रधानमंत्री

मातृ वंदना योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व एवं शिशु कल्याण योजना तथा आंगनवाड़ी आधारित स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी योजनाएं शामिल रही। पोषण और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का दिया संदेश डीपीओ ने बताया कि ‘आंगन मिलन सेवा’ मॉड्यूल के माध्यम से

आंगनवाड़ी केंद्रों को पोषण, स्वास्थ्य, योग और स्वस्थ जीवनशैली संबंधी जागरूकता के प्रभावी केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं एवं बच्चों को स्वास्थ्यवर्धक आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करना तथा बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य एवं समुचित विकास के प्रति परिवारों को जागरूक करना है।

निपुण हरियाणा मिशन के तहत चार खंडों में शिक्षक प्रशिक्षण का शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 5 अक्टूबर 2026। निपुण हरियाणा मिशन के अंतर्गत जिले के चार खंडों में प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ आज किया गया। जिला निपुण समन्वयक डॉ. सुदर्शन पुनिया ने बताया कि प्रशिक्षण के प्रथम चरण में बहादुरगढ़ में दो, झज्जर में दो तथा बेरी और साल्हावास में एक-एक बैच शुरू किए गए हैं। प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान के प्रभावी शिक्षण की नवीन एवं बाल-केंद्रित पद्धतियों से परिचित कराना है। झज्जर में प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास तथा जिला शिक्षा अधिकारी रतिन्तर सिंह ने राजकीय

कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, झज्जर में किया। प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों को संशोधित करते हुए अतिरिक्त उपायुक्त ने कहा कि एक निपुण शिक्षक ही विद्यार्थियों को निपुण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव साझा करते हुए अपने प्रिय शिक्षकों को याद किया और कहा कि प्रत्येक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के लिए आदर्श बनने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सीखने की प्रक्रिया में रुचि सबसे महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सफल हो जाएं, तो विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि अन्य गतिविधियों में भी बेहतर प्रदर्शन

कर सकते हैं। जिला शिक्षा अधिकारी रतिन्तर सिंह ने प्रशिक्षण को शिक्षकों के लिए आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि जैसे मोबाइल फोन में नए और बेहतर एप चलाने के लिए समय-समय पर सॉफ्टवेयर अपडेट किया जाता है, उसी प्रकार प्रशिक्षण शिक्षकों के ज्ञान, कौशल और शिक्षण-पद्धति को अपडेट करने का कार्य करता है। इससे शिक्षक नवीन एवं प्रभावी पैदागोजी को अपनाकर विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में सुधार ला सकते हैं। खंड शिक्षा अधिकारी सुनीता मल्हान ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। बेरी खंड में प्रशिक्षण का शुभारंभ प्राचार्य

डाइट अनिल श्योरान, जिला परियोजना समन्वयक अनिल शर्मा एवं खंड शिक्षा अधिकारी भारती वर्मा ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बेरी में किया। बहादुरगढ़ में खंड शिक्षा अधिकारी शेर सिंह ने राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में तथा साल्हावास में खंड शिक्षा अधिकारी जयपाल दहिया ने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, साल्हावास में प्रशिक्षण का शुभारंभ किया। प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर मास्टर ट्रेनर्स तथा डाइट के एक-एक संकाय सदस्य उपस्थित रहे और शिक्षकों को निपुण हरियाणा मिशन के लक्ष्यों के अनुरूप प्रभावी शिक्षण रणनीतियों का प्रशिक्षण दिया।

युवा सेवा और नवाचार को बनाएं जीवन का मंत्र : दिनेश शेखावत



‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ में विद्यार्थियों को जनसेवा, उद्यमिता और राष्ट्र निर्माण के लिए किया प्रेरित गांव छारा स्थित राजकीय महाविद्यालय में सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज कार्यक्रम आयोजित

झज्जर/बहादुरगढ़, 5 अक्टूबर। गांव छारा में सोमवार को डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे ‘सेवा संकल्प अभियान’ के तहत ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला संयोजक दिनेश शेखावत ने विद्यार्थियों को जनसेवा,

नवाचार और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य सुशील दलाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। दिनेश शेखावत ने कहा कि ‘सेवा परमो धर्मः’ की भावना को जीवन में अपनाकर युवा समाज की समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के लिए युवाओं को समर्थान प्रदाता और रोजगार सृजक बनने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। उन्होंने बताया कि ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ युवाओं के नवाचारी विचारों को मंच देने का महत्वपूर्ण प्रयास है। जिला स्तर पर चयनित श्रेष्ठ नवाचारों को एक लाख रुपये तक, जबकि राज्य स्तर पर श्रेष्ठ नवाचारों को पांच

लाख रुपये तक की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। उन्होंने विद्यार्थियों से अधिक से अधिक नवाचारों को डिजिटल पोर्टल पर पंजीकृत कराने का आह्वान किया। उद्योग विस्तार अधिकारी मंजीत दहिया ने विद्यार्थियों को स्टार्टअप नीतियों, उद्यमिता योजनाओं और सरकारी प्रोत्साहन की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों ने नशा मुक्ति जीवन, चरित्र निर्माण और समाज सेवा का सामूहिक संकल्प लिया। इस अवसर पर सहसंयोजक रविंद्र छारा, यादवीर सैनी, अनिल दलाल, दीपक सैनी, रमेश पंवार, प्रो जयंत, प्रो मोहित, प्रो राहुल, प्रो प्रवीण सहित प्राध्यापकगण व विद्यार्थी मौजूद रहे।

सेवा संकल्प अभियान के तहत मातनहेल और बादली में आज लगेगा सेवा सेतु कैंप

सेवा सेतु कैंप के माध्यम से सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है एक छत के नीचे जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट ने दी जानकारी

झज्जर, 05 अक्टूबर
जिलाभर में सेवा संकल्प अभियान के तहत आमजन को सरकार की योजनाओं का लाभ उनके नजदीक पहुंचाने के उद्देश्य से जिला

के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में सेवा सेतु कैंप लगाए जा रहे हैं। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में लग रहे सेवा सेतु कैंप में लोग सरकार की योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद मनीष फोगाट ने जानकारी देते हुए बताया कि मंगलवार 6 अक्टूबर को बादली ब्लॉक मुख्यालय व मातनहेल ब्लॉक मुख्यालय, 7 अक्टूबर को गांव

बुर्निया तथा 8 अक्टूबर को गांव गुभाना में सेवा सेतु कैंप आयोजित होंगे। उन्होंने बताया कि 9 अक्टूबर को गांव खानपुर खुर्द व गांव पाटोदा, 10 अक्टूबर को गांव बिरहोड़, 12 अक्टूबर को माछरीली ब्लॉक मुख्यालय व गांव ढाकला, 13 अक्टूबर को गांव खुड्डन, 14 अक्टूबर को साल्हावास ब्लॉक मुख्यालय तथा 15 अक्टूबर को गांव भुरावास में सेवा सेतु कैंप आयोजित किए जाएंगे।

--आंगनवाड़ी केंद्र बने पोषण और स्वस्थ जीवनशैली के जागरूकता केंद्र



‘आंगन मिलन सेवा’ के दूसरे दिन महिलाओं और बच्चों ने उत्साह से लिया भाग, 8343 लाभार्थी हुए लाभान्वित

बहादुरगढ़, 05 अक्टूबर
जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न मॉड्यूल में गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। सोमवार को ‘आंगन मिलन सेवा’ मॉड्यूल के अंतर्गत खंड बहादुरगढ़ ग्रामीण-एक के आंगनवाड़ी केंद्रों पर तीन दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन विभिन्न जागरूकता गतिविधियां एवं प्रतियोगिताएं

आयोजित की गईं। इस दौरान महिलाओं एवं बच्चों को पोषण, स्वस्थ खान-पान, बच्चों की वृद्धि एवं विकास तथा स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक किया गया। दूसरे दिन 8343 लाभार्थियों ने लिया कार्यक्रम में भाग महिला एवं बाल विकास विभाग की डीपीओ नेहा दहिया ने बताया कि आंगनवाड़ी केंद्रों पर आयोजित गतिविधियों के दौरान लाभार्थियों से संवाद किया गया और बच्चों के उचित पोषण, वृद्धि एवं विकास तथा स्वस्थ जीवनशैली के महत्व की जानकारी दी गई। गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के लिए संतुलित और



पौष्टिक आहार को लेकर भी जागरूक किया गया। उन्होंने बताया कि खंड बहादुरगढ़ ग्रामीण-एक के विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित कार्यक्रमों में कुल 8343 लाभार्थियों ने सहभागिता की। महिलाओं को सरकारी योजनाओं की दी जानकारी कार्यक्रम के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग की टीमों ने महिलाओं के कल्याण से जुड़ी विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी भी दी। इनमें प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना, मुख्यमंत्री

आंगनवाड़ी आधारित स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी योजनाएं शामिल हैं। पोषण और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का दिया संदेश डीपीओ ने बताया कि ‘आंगन मिलन सेवा’ मॉड्यूल के माध्यम से आंगनवाड़ी केंद्रों को पोषण, स्वास्थ्य, योग और स्वस्थ जीवनशैली संबंधी जागरूकता के प्रभावी केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं एवं बच्चों को स्वास्थ्यवर्धक आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करना तथा बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य एवं समुचित विकास के प्रति परिवारों को जागरूक करना है।

हर शिकायत को गंभीरता से लें अधिकारी, पात्रों को योजनाओं का लाभ दिलाएं : सीईओ



जिला स्तरीय समाधान शिविर में सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट ने सुनी जनसमस्याएं

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 5 अक्टूबर। जिला मुख्यालय स्थित लघु सचिवालय में सोमवार को डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में आयोजित समाधान शिविर में जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट ने आमजन की समस्याएं सुनीं और संबंधित

अधिकारियों को त्वरित समाधान के निर्देश दिए। सीईओ ने कहा कि आमजन की समस्याओं का समयबद्ध समाधान और पात्र नागरिकों तक सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक शिकायत को गंभीरता से लेते हुए उसकी नियमित समीक्षा करें और लंबित मामलों का प्राथमिकता के आधार पर

निपटारा सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर का उद्देश्य नागरिकों को कार्यालयों के चक्कर लगाने से राहत देना और उनकी समस्याओं का प्रभावी समाधान करना है। किसी भी शिकायत को केवल दर्ज करने तक सीमित न रखें, बल्कि उसके समाधान की प्रक्रिया भी समयबद्ध तरीके से पूरी करें। इस अवसर पर सीटीएम त्रु, डीडीपीओ निशा तंवर, एएफएसओ अमरजीत सिंह सहित विभिन्न विभागों के

कोयल नहीं, प्रकृति का यह पक्षी है इंसानों को सबसे सुरीला लगाने वाला गायक

डॉ. विजय गर्ग

जब भी सबसे मधुर पक्षी की आवाज़ को बात होती है, हमारे मन में अक्सर सबसे पहले कोयल का नाम आता है। उसकी पहचान वाली कूक सदियों से कविता, संगीत और लोक-संस्कृति का हिस्सा रही है। लेकिन प्रकृति में कई ऐसे पक्षी हैं जिनकी आवाज़ इंसानों को बेहद मधुर और मनमोहक लगती है। इनमें नाइटिंगेल यानी बुलबुल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अपनी समृद्ध, विविध और जटिल आवाज़ के कारण नाइटिंगेल को दुनिया के सबसे प्रभावशाली पक्षी-गायकों में गिना जाता है। इसकी आवाज़ केवल एक सरल पुकार नहीं होती, बल्कि इसमें विभिन्न सुर, लय, उतार-चढ़ाव और ध्वनि-पैटर्न का अद्भुत संयोजन दिखाई देता है। कई बार इसका गीत किसी प्राकृतिक संगीत रचना जैसा प्रतीत होता है।

पक्षी की आवाज़ हमें मधुर क्यों लगती है ?

किसी पक्षी का गीत हमें कितना सुंदर लगेगा, यह केवल उसकी ऊँचाई या तीव्रता पर निर्भर नहीं करता। सुर, लय, दोहराव, ध्वनि की विविधता और एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि तक सहज परिवर्तन भी हमारी पसंद को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ पक्षियों के गीतों में ऐसे पैटर्न होते हैं जिन्हें हमारा मस्तिष्क रोचक और सुखद मान सकता है। स्पष्ट सुरों, बदलती आवाुनियों और लयबद्ध ध्वनियों का संयोजन किसी पक्षी के गीत को विशेष रूप से संगीतमय बना सकता है।

नाइटिंगेल इस दृष्टि से खास है, क्योंकि इसके गीत में अनेक प्रकार के वाक्यांश और ध्वनि-पैटर्न होते हैं। यह तेजी से एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि

में बदल सकता है। इसकी यही विविधता संभवतः इसे मानव कानों के लिए इतना आकर्षक बनाती है।

नाइटिंगेल: संगीत की विविधता का उस्ताद

नाइटिंगेल दिन के साथ-साथ विशेषकर प्रजनन काल में रात के समय भी गाने के लिए प्रसिद्ध है। अपने छोटे आकार के बावजूद इसकी आवाज़ प्रभावशाली होती है। इसके गीत में सीटी जैसी ध्वनियां, ट्रिल, कंपन और अनेक प्रकार के स्वर सुनाई देते हैं।

सदियों से कवियों और लेखकों ने नाइटिंगेल को सौंदर्य, प्रेम और कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। इसलिए एक महान गायक के रूप में इसकी प्रतिष्ठा केवल आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययन का परिणाम नहीं है, बल्कि यह मानव संस्कृति में भी गहराई से जुड़ी हुई है।

फिर भी किसी एक पक्षी को सार्वभौमिक रूप से “सबसे मधुर” कहना सावधानी की मांग करता है। अलग- अलग लोगों की पसंद अलग हो सकती है और विभिन्न पक्षियों की आवाज़ों की परिणाम नहीं है, बल्कि विशेषताएं होती हैं।

कोयल आज भी इतनी लोकप्रिय क्यों है ?

कोयल की अपनी अलग सुंदरता है। उसकी पहचान वाली “कुहू-कुहू” जैसी आवाज़ सरल, दोहरावपूर्ण और तुरंत पहचान में आने वाली होती है।

इसकी लोकप्रियता का संबंध ऋतु परिवर्तन से भी हो सकता है। कई संस्कृतियों में कोयल की आवाज़ को वसंत और मौसम के बदलाव से जोड़ा जाता है। इसलिए उसकी पुकार सुनना केवल एक ध्वनि सुनना नहीं, बल्कि एक विशेष मौसम और उससे जुड़ी भावनाओं का अनुभव भी हो



कोयल

सकता है। इससे यह भी पता चलता है कि मधुरता हमेशा जटिलता पर निर्भर नहीं करती। कई बार एक सरल आवाज़ भी इसलिए अधिक प्रभावशाली लगती है क्योंकि वह परिचित होती है और हमारे भीतर पुरानी यादें जगा देती है।

पक्षियों का संगीत और मानव मस्तिष्क

पक्षियों के गीत यह भी दिखाते हैं कि मनुष्य ध्वनि के पैटर्न के प्रति कितने संवेदनशील हैं। संगीत में सुर, लय, दोहराव और विविधता जैसे तत्व महत्वपूर्ण होते हैं। पक्षियों के गीतों में भी इन तत्वों के प्राकृतिक रूप देखने को मिलते हैं।

पक्षियों की आवाज़ सुनना हमें प्रकृति से जुड़ाव का अनुभव भी करा सकता है। सुबह के समय सुनाई देने वाली पक्षियों की चहचहाहट केवल अलग-अलग आवाज़ों का समूह नहीं होती, बल्कि यह एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र की ध्वनि होती है। वैज्ञानिक पक्षियों की आवाज़ों का अध्ययन केवल इस दृष्टि से नहीं करते कि वे मनुष्यों को कैसी लगती हैं, बल्कि यह भी समझने का प्रयास करते हैं कि पक्षी स्वयं इन आवाज़ों के माध्यम से क्या संदेश देते हैं। उनके

आकर्षण हमें प्रकृति संरक्षण का एक

महत्वपूर्ण संदेश भी देता है। जब प्राकृतिक आवास नष्ट होते हैं, तो केवल पेड़-पौधे और वनस्पतियां ही नहीं खोतीं, बल्कि उन स्थानों पर रहने वाले पक्षियों की आवाज़ें भी धीरे-धीरे गायब हो सकती हैं।

शहरीकरण, गहन कृषि, प्रदूषण, कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, प्राकृतिक आवासों का विनाश और जलवायु परिवर्तन पक्षियों की संख्या तथा उनके प्रजनन क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए जंगलों, आर्द्रभूमियों, घास के मैदानों, बगीचों और छोटे-छोटे प्राकृतिक क्षेत्रों का संरक्षण पक्षियों की विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रकृति में कोई “सर्वश्रेष्ठ गायक” नहीं

किसी एक पक्षी को “सबसे अच्छा गायक” कहना आकर्षक शीर्षक हो सकता है, लेकिन प्रकृति में पक्षियों के बीच कोई संगीत प्रतियोगिता नहीं होती। प्रत्येक प्रजाति ने अपने पर्यावरण और जीवन-शैली के अनुरूप अपनी विशेष ध्वनि क्षमता विकसित की है।

नाइटिंगेल का जटिल गीत, कोयल की पहचान वाली पुकार, ब्लैकबर्ड की मधुर ध्वनियां और अस्थिर अस्थि पक्षियों के गीत मिलकर प्रकृति का विशाल संगीत संसार बनाते हैं।

जो आवाज़ एक व्यक्ति को सबसे अधिक ध्वनि लगती है, जरूरी नहीं कि दूसरे व्यक्ति को भी वही उतनी ही पसंद आए। उम्र, संस्कृति, व्यक्तिगत अनुभव और बचपन की यादें भी ध्वनि की हमारी पसंद को प्रभावित कर सकती हैं।

प्रकृति के इस संगीत को बचाना जरूरी है

पक्षियों के गीतों के प्रति हमारा

आकर्षण हमें प्रकृति संरक्षण का एक महत्वपूर्ण संदेश भी देता है। जब प्राकृतिक आवास नष्ट होते हैं, तो केवल पेड़-पौधे और वनस्पतियां ही नहीं खोतीं, बल्कि उन स्थानों पर रहने वाले पक्षियों की आवाज़ें भी धीरे-धीरे गायब हो सकती हैं।

शहरीकरण, गहन कृषि, प्रदूषण, कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, प्राकृतिक आवासों का विनाश और जलवायु परिवर्तन पक्षियों की संख्या तथा उनके प्रजनन क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए जंगलों, आर्द्रभूमियों, घास के मैदानों, बगीचों और छोटे-छोटे प्राकृतिक क्षेत्रों का संरक्षण पक्षियों की विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शायद सबसे सुंदर पक्षी-गीत केवल वह नहीं है जिसे हम व्यक्तिगत रूप से सबसे अधिक पसंद करते हैं। सबसे सुंदर आवाज़ वह भी हो सकती है जो हमें यह याद दिलाए कि हमारा प्राकृतिक संसार अभी जीवंत है।

कोयल का स्थान मानव कल्पना और संस्कृति में हमेशा विशेष रहेगा। लेकिन प्रकृति ने हमें अनेक अद्भुत गायक दिए हैं। नाइटिंगेल यानी बुलबुल अपनी असाधारण विविधता और संगीतमय जटिलता के माध्यम से यह सिखाती है कि प्रकृति की सबसे सुंदर धुन हमेशा उस पक्षी की आवाज़ से नहीं आती जिसकी हम सबसे पहले कल्पना करते हैं।

कभी-कभी प्रकृति का सबसे मधुर संगीत सुनने से अधिक हमें बस अपने आसपास की दुनिया को थोड़ा अधिक ध्यान से सुनने की जरूरत होती है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य । प्रख्यात शिक्षाविद्
स्ट्रीट चैंद, मलोट,

अक्टूबर: बदलती ऋतु, बदलता जीवन

कृषि प्रकृति के एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को समझती है—समय बहुत महत्वपूर्ण है। यदि बीज बहुत ज़रदी या बहुत देर से बोया जाए, तो उसे स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक घर के अंदर बिताते हैं, वे अक्सर पैरों से फिर से बाहर निकलना शुरू कर सकते हैं। पैदल चलना, साइकिल चलाना, व्यायाम करना और सामाजिक गतिविधियों अधिक सुविधाजनक हो जाती हैं। यह स्वस्थ आदतों को पुनः अपनाने का अच्छा अवसर है। अक्टूबर हमें यह भी याद दिलाता है कि स्वास्थ्य किसी एक बड़े निर्णय से नहीं बनता। घर छोटी-छोटी आदतों की निरंतर पालन से विकसित होता है—प्यांव नैद, संतुलित भोजन, नियमित शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त पानी पीना और प्रकृति के बीच समय बिताना। हालांकि सुविधान भोजन वह नहीं शैली है कि स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं समाप्त से गई हैं। तापमान में अचानक बदलाव, धूल, वायु प्रदूषण और मौसमी संक्रमण अक्टूबर प्राकृतिक संसार में भी अनेक दृश्यमान परिवर्तन लेकर आता है। पौधे तापमान, दिन के प्रकाश और पानी की उपलब्धता के अनुसार अपनी गतिविधियों में बदलाव करते हैं। कुछ पेड़ ठंडे महीनों की तैयारी करने लगते हैं, जबकि कुछ मौसमी पौधे अनुकूल परिस्थितियों में तेजी से बढ़ते हैं। कृषि प्रधान क्षेत्रों में अक्टूबर का विशेष महत्व है। किसान मौसम पर बारीकी से नज़र रखते हैं, क्योंकि ऋतु परिवर्तन बुवाई, सिंचाई, फसल की वृद्धि और कटाई के निर्णयों को प्रभावित करता है। उत्रार भारत में यह समय गेहूँ, सरसो, मटर और अन्य रबी फसलों की तैयारी से भी जुड़ा होता है।

कार्यों से उठने वाली थूल और मौसम संबंधी परिस्थितियाँ मिलकर हवा को स्वस्थ बना सकती हैं। यह हमें याद दिलाता है कि ऋतु परिवर्तन और पर्यावरणीय परिस्थितियाँ नहीं मिल सकतीं। इसलिए किसान पारंपरिक अनुभव के साथ-साथ मौसम की जानकारी, नूतन विज्ञान और आधुनिक कृषि तकनीक पर भी निर्भर होते जा रहे हैं। अक्टूबर और पृथ्वी ऋतु परिवर्तन पक्षियों को भी प्रभावित करता है। तापमान, भोजन की उपलब्धता और दिन के प्रकाश की अवधि अनेक आवागमन और व्यवहार को प्रभावित करती है। कुछ प्रवासी पक्षी ऐसे क्षेत्रों की ओर भागना शुरू कर देते हैं जहाँ भोजन और जलवायु उनके लिए अधिक अनुकूल होती है। मनुष्यों के लिए पक्षियों का राजाई फिलोमीटर का प्रवास प्राथम्यजनक तम सकता है, लेकिन पक्षियों के लिए यह मीट्रिक्स से विकसित एक प्राकृतिक जीवन-राणीत है। उनकी यात्राएँ हमें याद दिलाती हैं कि प्रकृति कभी स्थिर नहीं रहती। और अपने वातावरण के अनुसार ऋतु परिवर्तन पक्षियों को भी प्रभावित करता है। तापमान, दिन के प्रकाश और पानी की उपलब्धता के अनुसार अपनी गतिविधियों में बदलाव करते हैं। कुछ पेड़ ठंडे महीनों की तैयारी करने लगते हैं, जबकि कुछ मौसमी पौधे अनुकूल परिस्थितियों में तेजी से बढ़ते हैं। कृषि प्रधान क्षेत्रों में अक्टूबर का विशेष महत्व है। किसान मौसम पर बारीकी से नज़र रखते हैं, क्योंकि ऋतु परिवर्तन बुवाई, सिंचाई, फसल की वृद्धि और कटाई के निर्णयों को प्रभावित करता है। उत्रार भारत में यह समय गेहूँ, सरसो, मटर और अन्य रबी फसलों की तैयारी से भी जुड़ा होता है।

इस प्रकार प्रकृति का संक्रमण हमारे लिए व्यापकता परिवर्तन का अवसर भी बन सकता है। हम स्वयं से पूछ सकते हैं—कौन-सी आदतें हमें छोड़ देनी चाहिए? हमें क्या नया सीखना चाहिए? किन रिश्तों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है? हमने कौन-से तथ्य टाल रखे हैं? दर्ब समाप्त होने से पहले हम क्या प्रयत्न कर सकते हैं? लोयार और सांस्कृतिक जीवन

है। इस समय अनेक महत्वपूर्ण लोयार और उत्सव मनाए जाते हैं। लोयार परिवारों और समुदायों को जोड़ते हैं, लेकिन उनके साथ पर्यावरणीय जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है। उत्सव प्राथमिक कपड़े, शोर, जल प्रदूषण या अनावश्यक उपभोग का कारण नहीं बनने चाहिए। लोयार की वास्तविक भावना खुशी, सांसेदारी, करुणा और समुदायिक एकता में निहित है, न कि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने में। पर्यावरण-अनुकूल सजावट, कपड़े का ग्रिहत निपटान, प्लास्टिक का कम उपयोग और पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता हमारे लोयारों को अधिक सार्थक बना सकती है। बदलती ऋतु से मिलने वाली सीख अक्टूबर हमें एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और दार्शनिक संदेश देता है—परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

प्रकृति में कुछ भी हमेशा एक ज़ेरा नहीं रहता। पृथ्वी अपनी स्थिति बदलती है। वातावरण बदलता है। पौधे बदलते हैं। पशु अनुकूलन करते हैं। मनुष्य की आयु बढ़ती है। तकनीक बदलती है और समाज विकसित होता है। फिर भी मनुष्य अक्सर परिवर्तन का विरोध करता है, क्योंकि परिवर्तन के साथ अनिश्चितता जुड़ी होती है। प्रकृति एक एक अलग सीख देती है। पेड़ किसी ऋतु के समाप्त होने की शिक्षाएत नहीं करता; वह स्वयं को अनुकूलित करता है। पक्षी अपनी यात्रा बदलते हैं। पौधे अपनी वृद्धि की प्रक्रिया में बदलाव करते हैं। पशु अपने व्यवहार को परिस्थितियों के अनुसार ढालते हैं। मनुष्य भी अपनी बुद्धि और सीखने की क्षमता के कारण बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल सकता है। लेकिन अनुकूलन का अर्थ अपने मूल्यों को छोड़ना नहीं है। हमें अपने तरीके बदलने चाहिए, लेकिन अपने अछे सिद्धांतों को बनाए रखना चाहिए।

प्रकृति से फिर जुड़ने का समय अक्टूबर हमें अधिक समय बाहर बिताने का सुंदर अवसर देता है। सुबह की रेर, पौधों को देखना, सुविध्य का आनंद लेना, पेड़ के नीचे बैठना या आकाश के बदलते रंग और वातावरण को महसूस करना हमें प्रकृति के करीब ला सकता है। आधुनिक जीवन ने हमें स्क्रीन, कृत्रिम रोशनी और बंद कमरों से घेर दिया है। ऋतु परिवर्तन हमें याद दिलाता है कि हम अभी भी प्रकृति का हिस्सा हैं। बच्चों को विशेष रूप से इन परिवर्तनों को देखने और समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वे केवल नुकसान पहुँचाने में नहीं रुकते, बल्कि प्रकृति का निरीक्षण करके भी सीख सकते हैं। वे प्रश्न पूछ सकते हैं: तापमान क्यों बदल रहा है? कुछ पक्षी प्रवास क्यों करते हैं? किसान अपने फसलें क्यों बदलते हैं? पतियों का रंग क्यों बदलता है? दिन के प्रकाश की अवधि क्यों बदलती है? ऐसे प्रश्न सामान्य अवलोकन को वैज्ञानिक जिज्ञासा में बदल देते हैं। ऋतु संबंधी परिवर्तन प्राकृतिक रूप से हमेशा होते रहे हैं, लेकिन मानवीय गतिविधियाँ अब पृथ्वी की जलवायु प्रणाली को प्रभावित कर रही हैं। जीवनरस जैसा में वृद्धि, वनों की कटाई, प्रदूषण और तेज़ी से बढ़ता शहरीकरण तापमान, वर्षा और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर सकते हैं। जलवायु परिवर्तन का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक मौसमी अध्ययन के बाद एक घरोर बनता है। एक आदत निरंतर प्रयास से बदलती है। एक समाज धीरे-धीरे विकसित होता है। अक्टूबर इस सिद्धांत का सुंदर उदाहरण है—परिवर्तन हमेशा अचानक नहीं होता; कभी-कभी यह गुपुपुप, एक डिल्ली, एक दिन और एक छोटे कदम के साथ होता है।

इसलिए जिम्मेदारी सभी की है। सरकारों को प्रभावी पर्यावरणीय नीतियाँ बनानी चाहिए, उद्योगों को प्रदूषण कम करना चाहिए, समुदायों को प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करनी चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को जिम्मेदार विकल्प अपनाने चाहिए।

मेरा अक्टूबर हर व्यक्ति अक्टूबर को सकारात्मक परिवर्तन का महीना बना सकता है। हम कुछ सरल कदमों से सुरुआत कर सकते हैं—अधिक पैदल चलना, भोजन की बर्बादी कम करना, पेड़ लगाना या उनकी रक्षा करना, अनावश्यक प्लास्टिक का उपयोग कम करना, पानी बचाना, कचरा जताने से बचना और कुछ समय डिजिटल स्क्रीन से दूर रहना। विद्यार्थी सुविधान मौसम का उपयोग अनुशासित अध्ययन की आदत विकसित करने में कर सकते हैं। माता-पिता बच्चों को प्रकृति का निरीक्षण करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। शिक्षक ऋतु परिवर्तन को विज्ञान की शिक्षा से जोड़ सकते हैं। किसान पारंपरिक अनुभव को आधुनिक कृषि जानकारी के साथ जोड़ सकते हैं। इस प्रकार अक्टूबर केवल एक ऐसा महीना नहीं रहेगा जिसमें हम अपने जीवन में स्पष्ट रूप से कोई सकारात्मक परिवर्तन लाते।

परिवर्तन का गहरा अर्थ अक्टूबर की सुंदरता उसके संक्रमण में है। यह न पूरी तरह नहीं है और न पूरी तरह रही। यह हमें सिखाता है कि परिवर्तन के बीच का समय भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। हम अक्सर सुरुआत और अंत का उत्सव मनाते हैं, लेकिन बीच के समय को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। जबकि वास्तविक परिवर्तन इसी संक्रमण के दौरान होता है। एक बीज धीरे-धीरे पौधा बनता है। एक विद्यार्थी वर्षों के अध्ययन के बाद एक परोर बनता है। एक आदत निरंतर प्रयास से बदलती है। एक समाज धीरे-धीरे विकसित होता है। अक्टूबर इस सिद्धांत का सुंदर उदाहरण है—परिवर्तन हमेशा अचानक नहीं होता; कभी-कभी यह गुपुपुप, एक डिल्ली, एक दिन और एक छोटे कदम के साथ होता है।



संपादकीय

चिंतन-मनन



खाली समय: बोझ नहीं, सुनहरा अवसर



डॉ. विजय गर्ग

आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में खाली समय को अक्सर बेकार या उबाऊ समझा जाता है। जैसे ही कोई काम नहीं होता, हम मोबाइल उठाकर सोशल मीडिया देखने या मनोरंजन की तलाश में लग जाते हैं। लेकिन खाली समय हमारी सोच से कहीं अधिक मूल्यवान हो सकता है। यह सीखने, रचनात्मकता, आत्मचिंतन और व्यक्तिगत विकास का अवसर बन सकता है।

खाली समय मन को थोड़ा ठहरने का मौका देता है। लगातार व्यस्त रहने के कारण हम अपने लक्ष्यों, रुचियों और प्राथमिकताओं के बारे में गहराई से सोच नहीं पाते। शांत समय हमें स्वयं को बेहतर समझने और भविष्य की दिशा तय करने में मदद कर सकता है।

खाली समय का सबसे अच्छा उपयोग कुछ नया सीखने में किया जा सकता है। किताब पढ़ना, नई भाषा सीखना, कोई व्यावहारिक कौशल विकसित करना या अपनी रुचि के

विषय को समझना ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ाता है। प्रतिदिन कुछ मिनटों का सार्थक अध्ययन भी समय के साथ बड़ा बदलाव ला सकता है।

खाली समय रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है। लेखन, चित्रकला, बागवानी, संगीत, फोटोग्राफी या नए विचारों की खोज व्यक्ति को अपनी प्रतिभा और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देती है।

शारीरिक गतिविधि भी खाली समय का अच्छा उपयोग है। टहलना, खेलना, साइकिल चलाना या प्रकृति के बीच समय बिताना शरीर और मन दोनों को तरोताजा करता है। इसी तरह परिवार और मित्रों के साथ बातचीत करना तथा जरूरतमंदों की मदद करना रिश्तों और सामाजिक जुड़ाव को मजबूत करता है।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आराम करना आलस्य नहीं है। लगातार काम और तनाव के बाद मस्तिष्क को भी विश्राम की आवश्यकता होती है। कुछ समय स्क्रीन से दूर रहकर शांत बैठना

बेहतर सोच और नए विचारों को जन्म दे सकता है।

समस्या खाली समय होने में नहीं, बल्कि उसके उपयोग के तरीके में है। घंटों सोशल मीडिया पर बिताने के बजाय वही समय पढ़ने, सीखने, व्यायाम, रचनात्मक कार्य या सार्थक बातचीत में लगाया जा सकता है।

हमें हर खाली पल को उत्पादक बनाने की आवश्यकता नहीं है। जीवन में काम, सीखने, मनोरंजन और आराम के बीच संतुलन जरूरी है। उद्देश्य हर मिनट को व्यस्त रखना नहीं, बल्कि समय को सार्थक बनाना होना चाहिए।

खाली समय जीवन की खाली जगह नहीं, बल्कि संभावनाओं से भरा अवसर है। सही उपयोग किया जाए, तो यही समय हमें कुछ नया सीखने, स्वयं को समझने, स्वस्थ रहने और अपने लक्ष्यों के करीब पहुँचने का सुनहरा अवसर दे सकता है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल । शिक्षा स्तंभकार । प्रख्यात शिक्षाविद्
मलोट, पंजाब

अंतरात्मा और बाहरी ब्रह्मांड की खोज

डॉ. विजय गर्ग

मानव जिज्ञासा हमेशा दो दिशाओं में आगे बढ़ती रही है—भीतर की ओर और बाहर की ओर।

हम पृथ्वी, तारों, आकाशगंगाओं, ग्रहों और विशाल ब्रह्मांड को समझने के लिए बाहर की ओर देखते हैं। साथ ही, अपने विचारों, भावनाओं, स्मृतियों, चेतना, सपनों और पहचान को समझने के लिए भीतर की ओर भी देखते हैं।

ये दोनों यात्राएं अलग-अलग दिखाई दे सकती हैं, लेकिन मिलकर वे मानवता की सबसे पुरानी खोजों में से एक को व्यक्त करती हैं—हम कौन हैं और इस ब्रह्मांड में हमारा स्थान कहाँ है?

हमारे बाहर का ब्रह्मांड

जब हम रात के आकाश की ओर देखते हैं, तो हम एक विशाल ब्रह्मांडीय वास्तविकता को केवल एक छोटा-सा हिस्सा देख पाते हैं। आधुनिक खगोल विज्ञान ने दिखाया है कि ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएँ हैं और प्रत्येक आकाशगंगा में अस्थायी तारे हैं। हमारी पृथ्वी एक छोटा-सा ग्रह है, जो एक आकाशगंगा में स्थित एक सामान्य तारे की परिक्रमा कर रहा है।

फिर भी इसी छोटे से ग्रह पर ऐसा जीवन विकसित हुआ है, जो ब्रह्मांड की ओर देखकर उसकी उत्पत्ति के बारे में प्रश्न पूछ सकता है।

दूरबीनों ने हमें दूरस्थ आकाशगंगाओं, तारों और ग्रहों को देखने में सक्षम बनाया है। अंतरिक्ष अभियानों ने चंद्रमा, मंगल और अन्य खगोलीय पिंडों का अध्ययन किया है। वैज्ञानिक आज भी ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास के संकेतों की खोज कर रहे हैं।

हर नई खोज हमें याद दिलाती है कि ब्रह्मांड हमारे दैनिक अनुभव से कहीं अधिक विशाल और जटिल है। हमारे भीतर का ब्रह्मांड जब दूरबीन बाहरी ब्रह्मांड की खोज कर रही है, उसी समय हमारे बहुत करीब एक और अद्भुत संसार मौजूद है—मानव मस्तिष्क। मस्तिष्क में अरबों न्यूरॉन्स होते हैं, जो एक अत्यंत जटिल नेटवर्क के माध्यम से जुड़े रहते हैं। पढ़ी हमें सीखने, याद रखने, कल्पना करना, संवाद करने, संगीत रचने, गणितीय समस्याएँ हल करने और अपने अस्तित्व पर विचार करने में सक्षम बनाता है।

लेकिन अभी भी अनेक रहस्य

अनुसुलझे हैं। चेतना कैसे उत्पन्न होती है? स्मृतियां कैसे बनती हैं? हम सपने क्यों देखते हैं? भावनाएँ हमारे निर्णयों को कैसे प्रभावित करती हैं? मस्तिष्क हमारी पहचान की भावना कैसे बनाता है?

ये प्रश्न बताते हैं कि मनुष्य को समझना भी दूरस्थ आकाशगंगाओं को समझने जितना ही चुनौतीपूर्ण हो सकता है। **भीतर और बाहर की दुनिया का संबंध**

बाहरी ब्रह्मांड और हमारा आंतरिक संसार पूरी तरह अलग नहीं हैं। ब्रह्मांड के बारे में हमारा ज्ञान इसलिए संभव हुआ है क्योंकि मानव मस्तिष्क उसे देखता, मापता, गणना करता और उसकी व्याख्या करता है। हर दूरबीन, अंतरिक्ष यान और वैज्ञानिक समीकरण अंततः मानव जिज्ञासा और बुद्धि की अभिव्यक्ति हैं। इसी तरह, अपने बारे में हमारी समझ भी हमारे आसपास की दुनिया के साथ हमारे संबंधों से प्रभावित होती है। प्रकृति, समाज, संस्कृति, रिश्ते और जीवन के अनुभव हमारे विचारों और पहचान को आकार देते हैं।

इस अर्थ में, बाहरी की यात्रा और भीतर

की यात्रा लगातार एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

विज्ञान और आत्म-खोज विज्ञान हमें धारणाओं पर प्रश्न उठाने और प्रमाणों की जांच करने के लिए प्रेरित करता है। ये आदतें केवल मौलिक संसार को समझने के लिए ही नहीं, बल्कि स्वयं को समझने के लिए भी उपयोगी हैं।

आत्म-खोज तब शुरू होती है जब हम अपने विचारों और व्यवहार के प्रति जिज्ञासु होते हैं। हम समान परिस्थितियों में अलग-अलग प्रतिक्रिया क्यों करते हैं? हमारे निर्णयों को कौन-सी चीजें प्रभावित करती हैं? कौन-से डर हमें सीमित करते हैं? कौन-से मूल्य हमारा मार्गदर्शन करते हैं? हमारे जीवन को अर्थ क्या देता है?

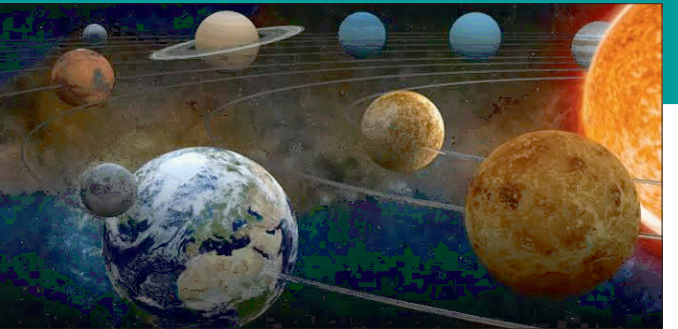
इन प्रश्नों के हमेशा सरल उत्तर नहीं होते। लेकिन इन्हें पूछना हमें अधिक आत्म-जागरूक बना सकता है। आत्म-जागरूकता का अर्थ यह मानना नहीं है कि हम अपने बारे में सब कुछ जानते हैं। इसका अर्थ है हमें अपनी मान्यदारी से देखने और लगातार सीखते रहने के लिए तैयार होना।

मौन और चिंतन की भूमिका

आधुनिक जीवन सूचनाओं, नोटिफिकेशन, बातचीत और लगातार डिजिटल उत्तेजना से भरा हुआ है। ऐसे वातावरण में मौन का महत्व और बढ़ गया है।

कुछ क्षण शांत चिंतन करने से व्यक्ति अपने विचारों को तुरंत प्रतिक्रिया दिए बिना देख सकता है। पढ़ना, लिखना, प्रकृति में टहलना, ध्यान करना या कुछ समय स्क्रीन से दूर रहना आत्म-चिंतन के अवसर पैदा कर सकता है। इसका उद्देश्य दुनिया से भागना नहीं, बल्कि दुनिया के साथ अपने संबंध को समझना है।

कभी-कभी हमें बाहर से शांत होना पड़ता है, ताकि हम अपने भीतर चल रही आवाज़ को सुन सकें। प्रकृति एक शिक्षक के रूप में सिखाता है। एक नदी हमें निरंतर गति का पल पढ़ाती है। बदलता हुआ आकाश याद दिलाता है कि कुछ भी हमेशा एक जैसा नहीं रहता। पौधों और जीवों का जीवन-चक्र अनुकूलन, विकास और पुनर्नवीकरण का



संदेश देता है। प्रकृति का वैज्ञानिक अवलोकन ज्ञान पैदा करता है, जबकि उसका चिंतनपूर्ण अवलोकन विनम्रता भी सिखा सकता है।

जितना अधिक हम प्रकृति को समझते हैं, उतना ही स्पष्ट होता जाता है कि मनुष्य एक बहुत बड़ी व्यवस्था का हिस्सा है। अर्थ की खोज वैज्ञानिक ज्ञान ब्रह्मांड के काम करने के अनेक तरीकों को समझा सकता है, लेकिन मनुष्य अर्थ से जुड़े प्रश्न भी पूछता है। हम यहाँ क्यों हैं? जीवन को सार्थक क्या बनाता है? अन्य मनुष्यों और प्राकृतिक संसार के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं? ये प्रश्न विज्ञान के साथ-साथ दर्शन, नैतिकता और व्यक्तिगत चिंतन से भी जुड़े हैं।

तकनीकी रूप से उन्नत समाज को भी विवेक और बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती

है। ज्ञान हमें बताता है कि क्या संभव हो सकता है। विवेक हमें सोचने में मदद करता है कि उस ज्ञान का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए। **तकनीक और मानव स्वयं** तकनीक नई ब्रह्मांड और स्वयं को समझने की हमारी क्षमता को बढ़ाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में जानकारी को संसाधित कर सकती है। ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस मस्तिष्क और मशीनों के बीच संवाद की नई संभावनाएँ खोल रहे हैं। आधुनिक इमर्जिंग तकनीकें शक्तिताओं को जैविक प्रक्रियाओं का अधिक विस्तार से अध्ययन करने में सहायता कर रही हैं।

लेकिन तकनीक हमें स्वयं से दूर भी कर सकती है। लगातार तुलना, डिजिटल दबाव और सूचनाओं की अंधेरी धारा आत्म-चिंतन को कठिन बना सकती है।



‘P M पोषण’ योजना के तहत छात्रों को ताजा, पौष्टिक और पोषक तत्वों से भरपूर भोजन उपलब्ध कराने पर ध्यान दें।

सविन माल्टीताई त्रंबकराव मंडलिक

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक नासिक

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता में आज मुंबई के सह्याद्रि रोस्ट हाउस में प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना (P M पोषण) के संबंध में एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना के तहत, यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्रों को समय पर ताजा, पौष्टिक और गुणवत्तापूर्ण भोजन मिले, स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर निर्णय लेने का अधिकार जिला स्तर पर सौंपा जाना चाहिए। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने निर्देश दिया कि इसके लिए स्कूल शिक्षा और महिला एवं बाल विकास विभाग को संयुक्त रूप से एक नीति बनानी चाहिए और आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए।

मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि वर्तमान में आठवीं कक्षा तक के छात्रों को पौष्टिक भोजन का लाभ दिया जाता है; इसके बजाय, दसवीं कक्षा तक के छात्रों को भी यह लाभ देने की संभावना की जांच

की जानी चाहिए और एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि भोजन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए, शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ उन ग्रामीण क्षेत्रों में भी 'सेंट्रल किचन' (केंद्रीय रसोई) का विकल्प अपनाया जाना चाहिए जहाँ यह संभव हो। दूरदराज और आदिवासी क्षेत्रों में, जहाँ सेंट्रल किचन से स्कूलों तक भोजन पहुँचाने में देरी होती है, वहाँ ग्राम पंचायतों के माध्यम से वैकल्पिक उपाय अपनाए जाने चाहिए। सेंट्रल किचन का विकल्प लागू करते समय, स्थानीय स्तर पर यह जांच की जानी चाहिए कि क्या पौष्टिक भोजन समय पर और ताजा रूप में स्कूलों तक पहुँच सकता है। जहाँ भी संभव हो, भोजन वितरण की जिम्मेदारी स्थानीय स्वयं-सहायता समूहों को दी जानी चाहिए। संबंधित जिला कलेक्टरों, जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों और नगर आयुक्तों को स्थानीय जरूरतों और संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए इस संबंध में निर्णय लेने चाहिए और भोजन की गुणवत्ता, सेवाओं तथा भुगतान के बारे में स्पष्ट मानदंड तय करने चाहिए।

जिला स्तर पर मांग का आकलन करके, स्कूल शिक्षा और महिला एवं बाल विकास विभाग दोनों विभागों के उपलब्ध संसाधनों के समन्वित उपयोग के माध्यम से छात्रों तक योजना का लाभ अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचा सकते हैं। मुख्यमंत्री फडणवीस ने निर्देश दिया कि इसके लिए विभागों को क्षेत्रीय स्तर पर आवश्यक प्रशासनिक लचीलापन और अधिकार प्रदान करने का निर्णय लेना चाहिए। संयुक्त नीति तैयार करने से पहले, जिला कलेक्टरों और जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों से सुझाव लिए जाने चाहिए ताकि स्थानीय मुश्किलों और जरूरी बदलावों को समझा जा सके। मुख्यमंत्री फडणवीस ने निर्देश दिया कि इसके अनुसार, व्यावहारिक सुझावों को नीति में शामिल किया जाए और कैबिनेट को एक संयुक्त प्रस्ताव सौंपा जाए।

जिला कलेक्टरों को जिला-स्तरीय पौष्टिक भोजन समिति की बैठकें करनी चाहिए और अपने-अपने क्षेत्रों में उपलब्ध प्रोटीन-युक्त खाद्य पदार्थों को भोजन में शामिल करने की योजना बनानी चाहिए। जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी



अधिकारियों को इस प्रक्रिया में तालमेल बिठाना चाहिए। मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि स्थानीय खान-पान की आदतों और छात्रों की पसंद को ध्यान में रखते हुए, पौष्टिक मूल्य वाले विकल्पों, जिनमें मोटे अनाज (मिलेट) से बने व्यंजन भी शामिल हैं, पर विचार किया जाना चाहिए।

स्कूल शिक्षा विभाग के माध्यम से, प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना का लाभ पहली से आठवीं कक्षा के छात्रों को 85,206 पात्र स्कूलों में दिया जाता है, जिनमें राज्य और केंद्र सरकार, स्थानीय स्व-शासन संस्थान, निजी सहायता प्राप्त और आंशिक रूप से सहायता प्राप्त स्कूल

शामिल हैं। केंद्र सरकार के नियमों के अनुसार, पहली से पांचवीं कक्षा के छात्रों को 450 कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटीन वाला दोपहर का भोजन मिलता है, जबकि छठी से आठवीं कक्षा के छात्रों को 700 कैलोरी और 20 ग्राम प्रोटीन वाला दोपहर का भोजन मिलता है। इस अवसर पर बताया

गया कि भोजन में विविधता लाने के लिए 12 तरह की रसोई कक्षा के छात्रों के विभिन्न प्रकार के पुलाव, खिचड़ी, उसल, वरण-भात और अन्य शामिल हैं। इस अवसर पर मंत्री दादाजी भुसे, अदिति टटकरे, राज्य मंत्री मेघना बोरडीकर और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

वर्तमान समय में, शिक्षा को अक्सर केवल पैसे कमाने का माध्यम समझा जाने लगा है।

वर्तमान में हमारे युवा पीढ़ी की दिशा और शिक्षा का अर्थ विषयक आलेख आज की युवा पीढ़ी की सोच और जीवन दर्शन में बदलाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। आर्थिक उन्नति का दौर, तकनीकी विकास और सोशल मीडिया के प्रभाव ने युवाओं की प्राथमिकताओं और जीवन के मूल्योंकन के तरीकों को काफी प्रभावित किया है। वर्तमान समय में, शिक्षा को अक्सर केवल पैसे कमाने का माध्यम समझा जाने लगा है। यह नजरिया इस धारणा को जन्म देता है कि जिसने अधिक पैसा कमाया वही सफल माना जाएगा हालांकि, यह सोच संकुचित और अधूरी है। शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान, सोच-विचार,

नैतिकता, और सामाजिक जिम्मेदारी से लैस करना है। शिक्षा के जरिये इंसान व्यक्ति के रूप में विकसित होता है, बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होता है और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए तैयार होता है। केवल पैसे का पीछा करना सफलता का पूर्ण मापदंड नहीं हो सकता। युवा पीढ़ी जब शिक्षा को सिर्फ पैसों से जोड़कर देखती है, तो इससे उनकी सोच भौतिकवादी और संकीर्ण हो सकती है, जिससे वे सामाजिक मूल्यों, सकारात्मक सोच और सहज सृजनात्मकता से दूर हो सकते हैं। जीवन की सच्ची सफलता केवल आर्थिक समृद्धि में नहीं, बल्कि मानसिक संतोष, व्यक्तिगत विकास, नैतिकता, और दूसरों की सेवा में हो

सकती है इसलिए जरूरी है कि युवा पीढ़ी को शिक्षा का सही अर्थ समझाया जाए कि यह आत्म-समृद्धि, ज्ञान-वृद्धि, और समाज के प्रति जिम्मेदार बनने का जरिया है, न कि केवल पैसे कमाने की मशीन। जो व्यक्ति समाज और अपने परिवार के लिए मूल्यवान योगदान करता है, उसके लिए जीवन की सफलता की परिभाषा अधिक प्रासंगिक है। अंत में, युवा पीढ़ी को प्रेरित करना चाहिए कि वे शिक्षा का उपयोग केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज सुधार, व्यक्तिगत विकास और नैतिकता के लिए करें। तभी वे एक सफल और संतुलित जीवन व्यतीत कर सकेंगे और देश का भविष्य सशक्त बनेगा।

मुश्ताक अहमदशाह

नेमाराम पंवार की हत्या के विरोध में 36 कौम का धरना-प्रदर्शन

हैदराबाद। कोमपल्ली-गुंडला-पोचमपल्ली निवासी नेमाराम पंवार की हत्या के विरोध में सोमवार को 36 कौम समाज की ओर से धरना-प्रदर्शन किया गया। पेट बशीरबाद पुलिस स्टेशन के धरना सुबह 10 बजे शुरू हुआ। बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने पहुंचकर घटना पर रोष जताया और हत्यारों की शीघ्रगिरफ्तारी की मांग की।

जानकारी के अनुसार नेमाराम पंवार 2 अक्टूबर की रात करीब 8 बजे घर पर यह कहकर निकले थे कि वे भजन संध्या कार्यक्रम में जा रहे हैं। देर रात तक घर नहीं लौटने पर परिवारजनों ने रिश्तेदारों और परिचितों से संपर्क किया, लेकिन उनका पता नहीं चला। इसके बाद पुलिस थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। पुलिस ने तलाश शुरू की। 4 अक्टूबर को नेमाराम पंवार का शव बरामद हुआ।

घटना के बाद 36 कौम समाज के लोगों ने हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरना-प्रदर्शन करने का निर्णय लिया। धरने के दौरान पुलिस की ओर से आशवासन दिया गया कि हत्यारों को जल्दी से जल्दी गिरफ्तार करने के लिए कार्रवाई की जा रही है।

धरना-प्रदर्शन में 36 कौम के समाजबंधुओं के साथ तेलंगाना में रहने वाले राजस्थानी समाज के लोगों ने भी

एकजुटता दिखाई। समाजबंधुओं ने कहा कि यदि पांच दिन के भीतर हत्यारों की गिरफ्तारी नहीं होती है तो पांच दिन बाद पुनः धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। धरना-प्रदर्शन में 36 कौम समाज के अध्यक्ष, सचिव, समस्त कार्यकारिणी सदस्य, समाजसेवी एवं गोभक्त सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। इस दौरान मदनलाल रावल, पारसनाथ चौहान, नैमिचन्द्र गोयल, चेनाराम चोयल, मोहनलाल हाम्बड़, सीए जसाराम बर्फी, चोलाराम हाम्बड़, दुर्गाराम मुलेवा, प्रेम पंवार, मंगलराम पंवार, सुरेश चोयल, शांतिलाल सुथार, उदय भास्कर, हरिसिंह रावत, बंशीलाल प्रजापति, घेवरराम चोयल, राजुराम चोयल, हंसाराम अगलेचा, प्रकाश सेपटा, रामलाल बर्फी, सतोष चोयल, सेसाराम पंवार, धन्नाराम देवड़ा, रुपाराम अगलेचा, हिरालाल सैणचा, राजुराम बर्फी, भीकाराम गुर्जर, मेहन्नेसिंह पितावत, बहादुरजी, मुकेश नाथ, कालुराम भायल, चतुराराम सानपुरा, सोनाराम हाम्बड़, धर्माराम सुथार, नेमाराम पंवार के भाई जोगाराम, नवलाराम, वकताराम, ताराराम, पुत्रवीरम, घेवर, ललित, यशवंत पंवार, रुपाराम गेहलोत, मांगीलाल सोलंकी, डुगाराम सोलंकी व 36 कौम समाज एवं तेलंगाना के समाजबंधु उपस्थित रहे।

मुश्ताक अहमदशाह

आठ साल बाद ओडिशा के कॉलेजों में लौटेगा छात्र लोकतंत्र

15 अक्टूबर को होंगे छात्रसंघ चुनाव, 7 अक्टूबर को अधिसूचना और 9 अक्टूबर से नामांकन की तैयारी

रिपोर्ट ड़ा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला / भुवनेश्वर



करीब आठ वर्षों के लंबे अंतराल के बाद ओडिशा के कॉलेजों और उच्च शिक्षण संस्थानों में एक बार फिर छात्रसंघ चुनाव की लोकतांत्रिक प्रक्रिया लौटने जा रही है। रिपोर्टों के अनुसार राज्यभर में छात्रसंघ चुनाव के लिए मतदान 15 अक्टूबर को प्रस्तावित है। उच्च शिक्षा विभाग चुनाव की तैयारियों को अंतिम रूप देने में जुटा है और 7 अक्टूबर को आधिकारिक अधिसूचना जारी होने की संभावना है। इसके बाद 9 अक्टूबर को नामांकन प्रक्रिया शुरू होने की बात सामने आ रही है।

छात्रसंघ चुनाव केवल पदाधिकारियों के चयन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि कैपस में लोकतांत्रिक चेतना, नेतृत्व क्षमता और

विद्यार्थियों की सामूहिक आवाज को संस्थागत मंच देने का माध्यम माना जाता है। लंबे अंतराल के बाद चुनाव की वापसी ने कॉलेज परिसरों में राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों को फिर से सक्रिय कर दिया है।

राज्य के विभिन्न कॉलेजों में संभावित उम्मीदवारों और छात्र संगठनों ने अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं। चुनाव के जरिए विद्यार्थी

शिक्षा, छात्र सुविधाओं, पुस्तकालय, छात्रावास, परिवहन, शुल्क, रोजगारपरक शिक्षा और परिसर की अन्य समस्याओं को अपनी प्राथमिकताओं के रूप में सामने रख सकते हैं।

हालांकि चुनाव की वापसी के साथ इसकी निष्पक्षता और पारदर्शिता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होगी। छात्र लोकतंत्र तभी मजबूत होगा, जब चुनाव भय, दबाव,

धनबल और बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त होकर हों और प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी पसंद का प्रतिनिधि चुनने का समान अवसर मिले।

आठ साल का अंतराल यह सवाल भी छोड़ गया है कि छात्र प्रतिनिधित्व की लोकतांत्रिक व्यवस्था को इतने लंबे समय तक नियमित क्यों नहीं रखा जा सका। अब जब चुनाव की प्रक्रिया फिर शुरू होने जा रही है, तो उम्मीद है

कि यह केवल एक चुनावी कार्यक्रम बनकर न रह जाए, बल्कि परिसरों में संवाद, जवाबदेही और लोकतांत्रिक नेतृत्व की नई संस्कृति को मजबूत करने का माध्यम बने।

15 अक्टूबर का मतदान इसलिए महज वोटिंग की तारीख नहीं, बल्कि ओडिशा के छात्र लोकतंत्र की पुनर्वापसी का महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है।

उपायुक्त ने इलाजरत बच्चों का हाल-चाल जाना

रिपोर्ट डॉ दीपक कुमार घोष

परिवहन विशेष समाचार पत्र खूंदी

इलाज सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए।

उपायुक्त ने चिकित्सकों को बच्चों की समुचित जांच के उपरांत आवश्यक उपचार उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। उन्होंने चिकित्सकों की टीम से बच्चों के स्वास्थ्य एवं उपचार के संबंध में जानकारी ली तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उपायुक्त ने जिला शिक्षा पदाधिकारी को विद्यालय के अन्य बच्चों से भी जानकारी लेने का निर्देश दिया, ताकि यदि किसी अन्य बच्चे में भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या के लक्षण पाए जाते हैं तो समय रहते उसकी जांच कर आवश्यक उपचार सुनिश्चित कराया जा सके।



सेवा सेतु कैंप में एक ही छत के नीचे मिल रहा केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की राष्ट्रीय सलाहकार एवं भाजपा प्रदेश प्रवक्ता डॉ. नेहा धवन ने किया कैंप का निरीक्षण, नागरिकों से संवाद कर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

रिपोर्ट हरियाणा हिंसार// राजेश सलूजा, परिवहन विशेष समाचार पत्र

सेवा संकल्प अभियान के तहत नगर परिषद कार्यालय में आयोजित दो दिवसीय 'सेवा सेतु कैंप' नागरिकों के लिए एक प्रभावी वन स्टॉप सेंटर के रूप में कार्य कर रहा है।

डीएमसी एवं अतिरिक्त उपायुक्त लक्षित सरीन के मार्गदर्शन में आयोजित इस कैंप में विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी एक ही स्थान पर उपलब्ध रहकर नागरिकों को केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ पात्र नागरिकों के आवेदन मौके पर करवाने तथा उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित कर रहे हैं।

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की राष्ट्रीय सलाहकार एवं भाजपा प्रदेश प्रवक्ता डॉ. नेहा धवन ने कैंप का निरीक्षण किया और विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई स्टॉलों का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से नागरिकों को उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं तथा प्राप्त शिकायतों एवं उनके समाधान की जानकारी ली। उन्होंने कैंप में पहुंचने नागरिकों से भी संवाद करते हुए योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ लेने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्राप्त की।

एक ही परिसर में उपलब्ध करवाई जा रही विभिन्न विभागों की सेवाएं

सेवा सेतु कैंप में नागरिकों को अलग-अलग सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ रही है। परिवार पहचान पत्र, राशन कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वरोजगार एवं स्ट्रीट वेड्स लोन, कृषि एवं संबद्ध सेवाओं, आयुष तथा सौर ऊर्जा सहित विभिन्न योजनाओं से संबंधित सेवाएं एवं

मार्गदर्शन एक ही परिसर में उपलब्ध करवाया जा रहा है।

परिवार पहचान पत्र में संशोधन, नए आवेदन तथा राशन कार्ड से संबंधित समस्याओं का मौके पर समाधान किया जा रहा है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन से संबंधित मामलों में भी आवश्यक प्रक्रिया पूरी करवाई जा रही है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री आवास योजना तथा रेहड़ी-पटरी संचालकों के लिए ऋण सुविधाओं की जानकारी एवं आवेदन प्रक्रिया में सहायता दी जा रही है।

व्यक्तिगत रूप से सुनी जा रही नागरिकों की समस्याएं

कैंप की विशेषता यह है कि प्रत्येक नागरिक की समस्या को व्यक्तिगत रूप से सुना जा रहा है। समस्या की प्रकृति के अनुसार संबंधित अधिकारी द्वारा मौके पर ही आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। जिन कार्यों का समाधान कुछ ही मिनटों में संभव है, उन्हें तत्काल पूरा करवाया जा रहा है, जिससे नागरिक अपना कार्य पूरा होने के बाद बिना अनावश्यक प्रतीक्षा

किए वापस लौट रहे हैं।

आयुष स्वास्थ्य शिविर में नागरिकों को मिल रहा स्वास्थ्य लाभ

कैंप में आयुष विभाग द्वारा स्वास्थ्य जांच, चिकित्सकीय परामर्श एवं आवश्यक दवाइयों की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। बड़ी संख्या में नागरिक आयुष स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले रहे हैं। स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के साथ-साथ लोगों को स्वस्थ जीवनशैली एवं आयुष पद्धति के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है।

सौर ऊर्जा सहित स्वरोजगार योजनाओं की दी जा रही जानकारी

सौर ऊर्जा विभाग के अधिकारी घर एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर सौर पैनल लगाने के इच्छुक नागरिकों को उपलब्ध योजनाओं, प्रक्रिया एवं सुविधाओं की जानकारी दे रहे हैं। इसके साथ ही डेयरी, मत्स्य पालन तथा अन्य स्वरोजगार से जुड़ी योजनाओं की जानकारी भी पात्र नागरिकों को उपलब्ध करवाई जा रही है।



अंत्योदय की भावना से अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा योजनाओं का लाभ

डॉ. नेहा धवन ने कहा कि ऐसे सेवा कैंपों के माध्यम से सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं सेवाओं को आम नागरिक तक सरल एवं सुगम तरीके से पहुंचाने में मदद मिलती है।

एक ही स्थान पर विभिन्न विभागों के अधिकारियों की उपलब्धता से नागरिकों का समय बचता है और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित होता है।

उन्होंने कहा कि 'सेवा संकल्प अभियान' का उद्देश्य जनसेवा एवं जनभागीदारी के माध्यम से समाज के

अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि वे ऐसे कैंपों में पहुंचकर उपलब्ध सेवाओं एवं योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएं। इस दौरान ईओ राजेंद्र सोनी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

चुनावी तानाशाही से खालिस तानाशाही की ओर !



आलेख : राजेंद्र शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार और 'लोकलहर' के संपादक

स्वीडन के गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय के वी-डेम इंस्टीट्यूट की डेनोकेसी रিপॉर्ट में २018 से यानी मोदीशाही के पहले कार्यकाल के आखिररी वर्ष से ही भारत को 'इलेक्टोरल ऑटोकेसी' या 'चुनावी तानाशाही' की श्रेणी में रखा जाता रहा है। इस श्रेणी में ऐसे निगम आते हैं, जहां बहुदलीय चुनावी व्यवस्था तो बनी हुई है, फिर भी अभिव्यक्ति की आजादी, मीडिया की स्वतंत्रता, स्वतंत्र/ निष्पक्ष चुनाव और संसदन बनाने की स्वतंत्रता जैसी जनतंत्र की बुनियादी शर्तों के मामले में, किसी रद्द तक कमी रहती है। याद रहे कि वी-डेम इंस्टीट्यूट ने दैसे तो २018 से ही मोदीशाही के भारत की पहचान चुनावी तानाशाही के रूप में करनी शुरू कर दी थी। फिर भी २0२1 की उसकी डेनोकेसी रिपोर्ट में और ज्यादा पुष्टता तरीके से अपने इस चरित्रांकन को दोहराया गया है। उसका यह चरित्रांकन इसलिए और पुष्टता हुआ था, क्योंकि २019 के बाद से जनतंत्र के तकाजों के हिसाब से गिरावट और बहुत आगे चली गयी थी। रिपोर्ट में इस गिरावट को मुख्यतः मोदी राज में सामने आए रुझानों और खासतौर पर लिबरल डेनोकेसी स्टेक्स पर भारत के २01३ के 0.57 से अधिक अंक के ऊंचे स्तर से गिराकर २0२0 के आखिर तक 0.३4 अंक पर आ जाने के साथ जोड़ा गया था। यह गिरावट अभिव्यक्ति/ मीडिया की स्वतंत्रता के सिफ़टूने, सिविल सोसाइटी पर बढ़ते दबावों और राजटोड़/डिफेंशन/आतंकवाद-विरोध से संबंधित कानूनों का बढ़ते पैमाने पर उपयोग किए जाने को दिखाती थी।

जहिर है कि वी-डेम की बाद की रिपोर्टें यही

दिखाती आयी हैं कि भारत २018 तक चुनावी तानाशाही के गड्डे में गिरने के बाद से, उसी गड्डे में पड़ा हुआ है। बहरहाल, वी-डेम के हुकूमतों के दर्जीकरण में, चुनावी तानाशाही से भी नौबे प्रिंसक कर कोई देश, क्लोज़ ऑटोकेसी या मुकम्मल तानाशाही के रसातल में भी जा सकता है। चुनाव आयोग पर मुकम्मल कब्जे के जरिए, पिछले कुछ वर्षों में और खासतौर पर २0२4 के आम चुनाव में मोदीशाही को तगड़ा धक्का लगने के बाद से, चुनावों को जिस तरह ज्यादा से ज्यादा झुटलाने के प्रबंध किए गए हैं, उनसे चुनावी तानाशाही की 'चुनावी' की शर्त का कमजोर सेना और तानाशाही और ग़ज़बूत सेनाओं तो परले ही सब को दिखाई दे रहा था। लेकिन, मोदीशाही के निबंधग्रण में भारतीय चुनाव आयोग पिछले सात बार से ज्यादा से जिस तरह से काम कर रहा था, उसके साल में मीडिया में और खासतौर पर इंडियन एक्सप्रेस में हुए मंडाफ़ेड़ के बाद, ऐसा लगता है कि चुनाव को पूरी तरह से निरर्थक ही बना देने का पूरा बंदोबस्त किया जा चुका है।

चुनाव आयोग के काम-काज के संबंध में पिछले छत्ते-दस दिन में हुए रहस्योद्घाटन से और इन रहस्योद्घाटन पर देश भर में हुई व्यापक प्रतिक्रिया के सामने, समूची चुनाव प्रक्रिया को गौतार से ध्वस्त करने के अपने खेल को बचाने की कोशिश में, सत्ताधारियों के दबाव में चुनाव आयोग द्वारा बैठक कर जारी की गयी 'सर्वसम्मत विधिपति' में नीति-परोक्ष रूप से कबूल की गयी गड़बड़ियों से, एक केंद्रीय सच्चाई निकल कर आती है। यह सच्चाई है, 140 करोड़ आबादी और करीब 100 करोड़ मतदाताओं के इस विशाल देश में, चुनाव व्यवस्था के बुनियादी कानों/निर्णय प्रक्रियाओं का पूरी तरह से केंद्रीयकरण। सारी चुनाव व्यवस्था का यह केंद्रीयकरण राजधानी में बैठे केंद्रीय चुनाव आयोग के संधों में केंद्रीयकरण एक ही सीमित नहीं रहता है। यह तीन सदस्यीय चुनाव आयोग में भी वास्तविक शक्ति, एकलौते मुख्य चुनाव आयुक्त और उसके आदेश से सभी अंगैयन्थों के गुट के संधों में सिमट जाने पर जाकर मुकम्मल होता है। और इस गुट की डेरियाँ सत्ता के शीर्ष पर बैठे जोड़े के संध में हैं, जो नबे कानून के अंतर्गत चुनाव आयुक्तों को नियुक्त भी करती है।

वेशाक, चुनाव आयोग में भी मुख्य चुनाव आयुक्त के संधों में शक्तियों के इस केंद्रीयकरण को, लाल के रहस्योद्घाटन से एक बड़ा धक्का लगा है। इन रहस्योद्घाटन में यह जानकारी खास थी कि पिछले दस गरीनों में ही कम से कम 14 मौकों पर, मुख्य चुनाव आयुक्त के इतर, अन्य चुनाव आयुक्तों ने आयोग के अलग-अलग निर्णयों पर अपनी आपत्तियां/असहमतियां दर्ज करायी थीं। कुछ मामलों में दो चुनाव आयुक्तों ने एक ही मुद्दे पर अलग-अलग अपनी आपत्तियां दर्ज करायी थीं, जो वास्तव में चुनाव आयोग का बहुमत होता था। चुनाव आयोग संबंधी कानूनों के अनुसार, आयोग के निर्णय सर्वसम्मति से और सर्वसम्मति से संभव न हो तो, बहुमत के आधार पर लिए जाने चाहिए। किंतु अलगत में होते हुए भी, निर्णय की प्रक्रिया को तोड़-गड़ोकर मुख्य चुनाव आयुक्त के निर्णय को, कई मामलों में चुनाव आयोग का निर्णय बनाकर लागू कर दिया गया। यह खासतौर पर मतदाता सूचियों में नाम जोड़ने/हटाने के सारे अधिकार ईसीआईनेट नाम के पूरी तरह से केंद्रीयकृत कंप्यूटर तंत्र के हवाले किए जाने की गंलविकृति के रूप में सामने आया। और इसी प्रकार नये मतदाताओं से भरवाए जाने वाले फार्म-6 में अद्वैध संशोधन की एक और बड़ी विकृति तंत्र के हवाले किए जाने का यह अद्वैध संशोधन, जिसे जोड़ने का चुनाव आयोग को कोई अधिकार है नहीं है, २0२6 से बनने वाले नये मतदाताओं के लिए, उनके माता-पिता या उनके भी माता-पिता की २00२ की मतदाता सूचियों में मौजूदगी की शर्त लगाता है, जोकि माताधिकार देने लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी निवास की निशेधता साबित करने मांग करना है। हेरानी की बात नहीं है कि चुनाव आयोग द्वारा बिहार के विधानसभा चुनाव से परले, पिछले सात मध्य से शुरू किए गए मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण या एरआईआर को शुरू से ही पिछले दरवाजे एनआईसी यानी राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर तैयार करने की प्रक्रिया कस जा रहा था, जो संध परिवार का प्रिय प्रोजेक्ट है। ईसीआईनेट के माध्यम से मतदाता सूचियों में बदलावों के पूरी तरह से केंद्रीयकरण के संदर्भ में यह यार रखना जरूरी है कि भारत के चुनावी कानूनों के हिसाब से विधानसभाई क्षेत्र स्तर के अधिकारी, ईआरओ को ही मतदाता सूचियों में

नाम जोड़ने/हटाने का वैध अधिकार है। उससे नौबे की श्रृंखला बृथ लेवल आफ़िसर या बीएलओ तक जाती है और यही मतदाता सूचियों में बदलाव का तंत्र है। यह व्यवस्था ढांचागत रूप से यह सुनिश्चित करती है कि मतदाता सूचियों में स्थानीय रूप से गड़बड़ियां तो रह सकती हैं, लेकिन बड़े पैमाने पर गड़बड़ी संभव है नहीं है। बहरहाल, जैसा कि गोवा का चर्चित हुआ सौ से कुछ कम मतदाताओं के नाम जोड़े जाने के लिए, राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी के नाकाम संघर्ष का प्रकरण बताता है, ईसीआईनेट के जरिए मतदाता सूचियों में बदलाव की प्रक्रियाओं समेत इन सूचियों का इस रद्द तक केंद्रीयकरण कर दिया गया है कि, राज्य का मुख्य चुनाव अधिकारी तक उन तक पहुंच नहीं सकता है, फिर ईआरओ को पहुंच हासिल लेने का तो सवाल ही कहां उठता है ? यह दूसरी बात है कि यह इस पूरी व्यवस्था को ही अद्वैयानिक बना देता है। ईसीआईनेट का और उसके निबंधकों का आगमक इतना ताकतवर हो जाना, कोई संयोग ही नहीं है। यह तानाशाही के प्रोजेक्ट का नया संघियार है, जो अन्मत्त प्रौद्योगिकी ने गूढ़या कराया है। तानाशाहों और तानाशाहियों को संघियार के रूप में उच्च-प्रौद्योगिकी खेसा पसंद आती है। और यह इसलिए तो होता ही है कि इस तरह तानाशाहियों की लोगों को नियंत्रित करने की शक्ति बहुत बढ़ जाती है। ऐसा इसलिए भी होता है कि तानाशाहियां ऐसी प्रौद्योगिकियों की मानवीय कीमत की ओर से पूरी तरह से आंखें मूंदे किए रख सकते हैं। अक्सर तानाशाह कम पढ़े तथा सांस्कृतिक रूप से दरिद्र होते हैं, क्योंकि यह उनके लिए अपने किए की मानवीय कीमत की ओर से आंखें मूंदे रखकर, अपने प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाते रखना आसान बनाता है — जैसे मोदीशाही के लिए हिंदू राष्ट्र की परियोजना को आगे बढ़ाना। यहां हम एसआईआर पर आ जाते हैं, जो उच्च-प्रौद्योगिकी और हिंदू-राष्ट्र के इसी गड़बड़न के समर्थक होता है। सभी जानते हैं कि एसआईआर की जरूरत, जो कि वास्तव में नबे सिर से और भारतीय मूल की छन्नी में छाकर, अग्रकों को बाहर करे हुए मतदाता सूचियां तैयार करने की ओर ईसीलिए इस देश की आबादी के विशाल हिस्से के लिए बहुत ही तकलीफदेह तथा करोड़ों लोगों को बाहर करने वाली प्रक्रिया

है, सत्ताधारी संघ-भाजपा परिवार के एक अंधाधुंध प्रचार से बनी धारणा पर टिकी हुई थी। यह धारणा यह है कि बहुत बड़ी संख्या में विदेशी घुसपैठिए चोरी-छिपे आकर यहां बस गए हैं। इस पूरी कसरत का एक ही मकसद था — मतदाता सूचियों को इन 'घुसपैठियों' से 'स्वच्छ' करना। वूकि घुसपैठियों की विशाल संख्या एक निथक है, इसलिए इस छन्नी से वास्तविक घुसपैठियों की कोई अंशेखनीय संख्या निकलने के तो अब तक कोई साक्ष्य नहीं है, जबकि देश के बड़े हिस्से में एसआईआर की प्रक्रिया लगभग पूरी हो चुकी है, जबकि करोड़ों ऐसे कमजोर हंसियत के भारतीयों को इस छन्नी से छानकर बाहर किया जा चुका है, जिनके पास अपने वास्तव में भारतीय लेने के दस्तावेजों साक्ष्य नहीं है। और वूकि यह हिंदुत्व द्वारा उच्च प्रौद्योगिकी को संघियार बनाने का गमला है, जहिर है कि इस छन्नी ने बाकी गरीबों के साथ, मुसलमानों की खासतौर पर ज्यादा से ज्यादा संख्या को बाहर करने की कोशिश की है। जहिर है कि यह पूरी कसरत, उस तरह के केंद्रीयकृत शीजार के बिना संभव है नहीं थी। और जो चीज बिल्कुल ही संभव नहीं थी, वह थी मतदाताओं की लक्षित छंटनी। बिलर में वूकि दस्तावेजों के रास्ते से अल्पसंख्यकों की दारगेटेड छंटनी में ज्यादा कामयाबी नहीं मिली थी, अगले चरण में बंगाल में दस्तावेजी जांच के बाद, कंप्यूटर के एल्गोरिस्म के सहारे एक ओर छन्नी जोड़ दी गयी — तौजिकल डिस्क्रिपेसी। इस छन्नी से बाहर हुए लोगों में से, जिन्हें ब्याधिक प्रक्रिया ने मतदाताओं की सूची में बसल कर दिया, अगले से भी 15 लाख से ज्यादा लोगों के मतदाता सूची से बाहर किए जाने की शर्तों, खुद चुनाव आयोग की ओर से लगायी गयी। और यह भी, जैसा कि अब खलें पता चल चुका है, चुनाव आयोग के बहुमत को अंधेरे में रखकर किया जा रहा था। ईसीआईनेट के रूप में उच्च प्रौद्योगिकी के जरिए जबरदस्त केंद्रीकरण और उसके इतने ही केंद्रीकृत निबंधन के बिना, यह कभी संभव है नहीं था। यहां से चुनाव का ही निरर्थक बनाया जाना एक दम दूर भी नहीं रह जाता है। मोदीशाही ने अपने गंंसूखे साफ़ कर दिए हैं। देया जनतंत्र की ताकतें इन गंंसूबों को विफल करने के लिए तैयार हैं?

सीएजी रिपोर्ट में बीजद के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश....



मनोरेजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: गत 29 सितंबर को विधानसभा में सीएजी की छह रिपोर्टें पेश की गईं। इन रिपोर्टों में पूर्ववर्ती बीजद सरकार के कार्यकाल के दौरान विभिन्न विभागों में व्यापक अनियमितताओं, वित्तीय कुप्रबंधन तथा भ्रष्टाचार के मामले सामने आए हैं। खनन क्षेत्रों के विकास के प्रमुख आधार के रूप में डीएमएफ फंड को मजबूत करने के बजाय पूर्ववर्ती सरकार ने इसे जमीनी स्तर पर कमजोर कर दिया। वहीं, ओडिशा में पर्यटन क्षेत्र में अपार संभावनाएं होने के बावजूद अनियमितताओं और अक्षमता के कारण इसके विकास में बाधा उत्पन्न होने की बात भी स्पष्ट हुई है।

राज्य कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रदेश प्रवक्ता तथा उद्योग प्रकोष्ठ के प्रमुख डॉ. तपन चांद ने कहा कि बीजद के नेता भ्रष्टाचार के पहाड़ पर बैठे हैं और सीएजी रिपोर्ट ने उस बारूद के ढेर में आग लगा दी है। अब जनता की प्रतिक्रिया का विस्फोट होना निश्चित है। डॉ. चांद ने कहा कि सीएजी रिपोर्ट में सामने आई अनियमितताओं और वित्तीय दुरुपयोग की व्यापकता को देखते हुए एमएएमडीआर एक्ट 2026 को लेकर बीजद द्वारा लगाए जा रहे विभिन्न आरोपों और वास्तविक तथ्यों के बीच अंतर स्पष्ट हो जाता

है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2005 में ओडिशा हाईकोर्ट ने ओरिसेड कानून को रद्द कर दिया था। इसके बावजूद तत्कालीन बीजद सरकार ने नीलामी व्यवस्था लागू करने की मांग क्यों नहीं की? यदि उस समय नीलामी व्यवस्था लागू कर दी गई होती, तो राज्य का खनिज राजस्व हर वर्ष कम से कम 17 हजार करोड़ रुपये बढ़ सकता था। अनुमान है कि 2005 से 2015 के बीच नीलामी व्यवस्था लागू नहीं होने के कारण राज्य को लगभग 1.70 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। दूसरी ओर, सुप्रीम कोर्ट में करीब 18 वर्षों तक ओरिसेड कानून से संबंधित मामले में बीजद सरकार द्वारा कोई तत्परता नहीं दिखाता ओडिशा के हितों के खिलाफ था। खनिज संपदा से समृद्ध ओडिशा में डीएमएफ (डिस्ट्रिक्ट मिनरल फ़ाउंडेशन) फंड विकास का एक प्रमुख आधार है। लेकिन सीएजी ऑडिट में डीएमएफ के संचालन और धन के उपयोग को लेकर कई अनियमितताएं सामने आई हैं। डीएमएफ कानून के अनुसार, फंड का उपयोग प्रत्यक्ष रूप से खदान के 15 किलोमीटर के दायरे तथा अप्रत्यक्ष रूप से 25 किलोमीटर के दायरे में किया जाना चाहिए। लेकिन सीएजी रिपोर्ट के अनुसार, खनन से बिल्कुल प्रभावित नहीं होने वाले गांवों में 983 करोड़ रुपये खर्च किए

गए, जबकि खनन से प्रभावित 584 गांवों में डीएमएफ फंड से कोई परियोजना या राशि उपलब्ध नहीं कराई गई। इससे स्थानीय आदिवासी, अनुसूचित जाति तथा खनन प्रभावित लोगों को उनके उचित अधिकारों से वंचित किया गया। उचित निवेश संबंधी निर्णय लेने में विफलता के कारण केंदुझर डीएमएफ को ब्याज के रूप में 84.51 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इसी तरह ढेंकानाल में 2.44 करोड़ रुपये, मयूरभंज में 6.85 करोड़ रुपये और नबरंगपुर में 0.20 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। डॉ. चांद ने कहा कि बीजद सरकार के कार्यकाल के दौरान ओडिशा के पर्यटन क्षेत्र में भी व्यापक अनियमितताएं और परियोजनाओं के क्रियान्वयन में अक्षमता सामने आई हैं। इनके रिट्रीट में 207.68 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। पुरी प्रसाद परियोजना में 6.49 करोड़ रुपये की राशि का दुरुपयोग हुआ और परियोजना को बांद में ही बंद कर दिया गया। डॉ. चांद ने कहा कि भ्रष्टाचार और अनियमितताओं को लेकर सीएजी रिपोर्ट में उठाए गए सवाल अब सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गए हैं। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में पूर्व मंत्री श्री अरविंद ढाली तथा प्रदेश प्रवक्ता श्री संजय रथ भी उपस्थित थे।

राहुल गांधी की आर्थिक भविष्यवाणी, जयशंकर ने दोहराई

गंभीर आर्थिक संकट की ओर बढ़ रही है भारत की अर्थव्यवस्था

मनोरेजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: आज कांग्रेस भवन में भारत में आने वाले गंभीर आर्थिक संकट को लेकर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। सम्मेलन में शामिल एआईसीसी प्रवक्ता डॉ. हमीद हुसैन ने अपना वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा आर्थिक, कृषि और आर्थिक संकट से संबंधित दिए गए बयानों को विदेश मंत्री एस. जयशंकर द्वारा दोहराए जाने के मुद्दे पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। राहुल गांधी ने पहले ही चेतावनी दी थी कि मोदी सरकार की गलत नीतियों के कारण पूरे देश में आर्थिक तूफान या सुनामी आने की आशंका है। इसी मुद्दे को विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र में अपने संबोधन के दौरान दोहराया है। उन्होंने कहा कि दुनिया के विकासशील देशों यानी 'लोबल साउथ' के साथ-साथ भारत में भी चार ' F' —Food (खाद्य), Fuel (ईंधन), Finance (वित्त) और Fertilizer (उर्वरक)—का संकट पैदा होगा। डॉ. हमीद हुसैन ने डॉ. दीपक यादव की पुस्तक “Rahul Gandhi's India” का हवाला देते हुए कहा कि सरकार की बड़े उद्योगपतियों के प्रति कथित पक्षधरता और गरीब तथा छोटे व्यापारियों के खिलाफ नीतियों के कारण राहुल गांधी ने इस संकट को लेकर बहुत पहले ही चेतावनी दे दी थी। स्ब्सिडी वापस लेना, स्थायी न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) नीति का अभाव, इकड़ स्टोरेज और कृषि प्रसरकण इकाइयों की कमी तथा उर्वरकों की कीमतों में वृद्धि और उनकी अनुपलब्धता ने किसानों के लिए बड़ी परेशानी पैदा कर दी है। तहर वर्ष असम, बिहार, उत्तर प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में बाढ़ के कारण लगभग चार करोड़ हेक्टेयर भूमि की फसल नष्ट



हो रही है। लेकिन सरकार के पास इससे निपटने के लिए कोई ठोस योजना नहीं है। बाढ़ के पानी को नियंत्रित करने के लिए कोई नई झील, जलाशय, बांध, बैराज या तटबंध नहीं बनाए गए हैं। इसके अलावा लगातार बढ़ती महंगाई, रुपये के अवमूल्यन, बेरोजगारी की समस्या और जीएसटी की कथित गलत नीतियों के कारण गरीब और मध्यम वर्ग पर तिरह किसानों के कर्मामफ नहीं किए जा रहे हैं। करोड़ों लोगों ने अपनी आजीविका खो दी है। देश की आर्थिक स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी रैंक 140, बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) में 138 और मानव विकास सूचकांक (HDI) में 132वें स्थान से नीचे पहुंच गई है। यहां तक कि दुनिया के एक-तिहाई भूखे लोग भारत में रहते हैं और देश की लगभग 15 प्रतिशत आबादी कुपोषण का शिकार है। ईंधन संकट केवल वैश्विक युद्धों के कारण पैदा नहीं हुआ है, बल्कि पिछले 12 वर्षों में तेल और गैस की खोज के लिए कोई नया प्रभावी कदम नहीं उठाया गया है। इसके साथ ही ईरान और रूस से तेल आयात में कमी के कारण भी यह संकट बढ़ा है। सितंबर महीने में देश का विदेशी मुद्रा भंडार हर सप्ताह लगभग 14 अरब डॉलर घटा है। उन्होंने कहा कि यदि ऐसी परिस्थितियां और नीतियां जारी रहती हैं, तो देश इस पूरी सदी तक एक अविकसित देश बना रह जाएगा। इसलिए देश की मौजूदा नीतियों में व्यापक संरचनात्मक

और कार्यात्मक बदलाव की तत्काल आवश्यकता है। सम्मेलन में मौजूद कांग्रेस नेता सिद्धार्थ राउतराय और कांग्रेस प्रवक्ता जयश्री पात्र ने भी अपनी बात रखते हुए कहा कि देश के विपक्ष के नेता राहुल गांधी लगातार देश में आर्थिक समस्या आने की बात कहते रहे हैं, जो अब वास्तव में सच होती दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि इस आर्थिक सुनामी को लेकर देश के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री या किसी अन्य मंत्री की ओर से जमीन पर कोई स्पष्ट बयान नहीं आ रहा है। इसके बजाय विदेश मंत्री एस. जयशंकर विदेश में बैठकर भाषण दे रहे हैं कि 'लोबल साउथ' और भारत पर 4F Crisis —Food, Fuel, Fertilizer और Finance का संकट मंडरा रहा है। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि यह कोई अंतरराष्ट्रीय दुर्घटना नहीं, बल्कि मोदी सरकार के पिछले 12 वर्षों की विफलताओं से पैदा हुई समस्या है। पहले समस्या पैदा करना और फिर उसका दोष दूसरों पर डालना क्या सरकार की आदत बन गई है? खाद्य सुरक्षा को दांव पर लगाकर ईंधन सुरक्षा लाने का दिखावा करना किस प्रकार का सुरासन है? इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल के बावजूद पेट्रोल की कीमतें कम नहीं हुईं, जबकि चीनी, चावल और अंडे जैसी आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ गए हैं। वहीं, विश्व बाजार में कच्चे तेल की कीमत कम होने के बावजूद पेट्रोल की कीमत कम करने के जनता को उसका लाभ नहीं दिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर सेस तथा एक्साइज इधुटी बढ़ाकर लगभग 32 लाख करोड़ रुपये से अधिक की आय की है। डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर होकर लगातार निचले स्तर पर जा रहा है।

हेमन्त सोरेन एशियन गेम्स 2026 में स्वर्ण पदक जीतने वाली खिलाड़ियों से मिले

खिलाड़ियों को मिठाई खिलाकर और अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में एशियन गेम्स 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीतकर स्वर्णिम इतिहास रचने वाली भारतीय महिला हॉकी टीम की झारखंडी खिलाड़ियों ने मुलाकात की। इन खिलाड़ियों में भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सलीमा टेटे, निक्की प्रधान, ब्यूटी डुंगडुंग एवं दीपिका सोरेग शामिल थीं। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने सभी खिलाड़ियों से उनके शानदार प्रदर्शन की तैयारियों से संबंधित जानकारी प्राप्त की तथा अनुभव को जाना। मुख्यमंत्री ने मिठाई खिला कर इस शानदार उपलब्धि के लिए उनकी हौसला अफजाई की और अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक प्राप्त कर



स्वर्णिम सफलता अर्जित करने में झारखंड की खिलाड़ियों का योगदान राज्य व देश के लिए गौरव व सम्मान की बात है। खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम, अनुशासन और अदम्य जब्बे से देश का गौरव बढ़ाया है। खिलाड़ियों की इस शानदार उपलब्धि से राज्य के खेल इतिहास में एक और गौरवपूर्ण अध्याय जुड़ गया है। इन उपलब्धियों से झारखंड के

साथ-साथ देश की युवा पीढ़ी, खिलाड़ियों एवं विशेषकर राज्य की बेटियों को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलेगी। मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों को आगे भी इसी उत्साह, लगन, परिश्रम व समर्पण के साथ देश का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि झारखंड में खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए राज्य सरकार प्रयत्नशील

है। खिलाड़ियों से विधायक श्रीमती कल्पना सोरेन ने भी मिलकर बधाई व शुभकामनाएं देते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। मौके पर खिलाड़ियों के साथ हॉकी झारखंड के डीजी विजय शंकर सिंह, इंटरनेशनल रेसलिंग कोच-सह-सीईओ झारखंड रजनीश कुमार एवं जेनरल सेक्रेटरी मनोज कुमार प्रसाद भी उपस्थित रहे।



जेपीएससी घोटाले में अभय तिवारी के दो एजेन्ट गिरफ्तार

अभ्यर्थियों से 10-10 लाख लेकर एमओआर हेराफेरी कर पास कराते थे परीक्षा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, जेपीएससी परीक्षा में अनियमितता के बाद पीटी में सफल हुए दिलीप राणा व ओमप्रकाश राणा को सीआईडी की एसआईटी ने शनिवार को गिरफ्तार कर लिया। दोनों को गिरफ्तारी सीआईडी ने केस संख्या 16/2026 रूप से अंकित है। जानकारी के अनुसार दोनों सगे भाई हैं। सीआईडी को पुख्ता साक्ष्य मिले थे कि उन्होंने अभय तिवारी के लिए

एजेंट का काम करने वाले बुद्धेश्वर भगत के जरिए परीक्षा में सेंटेंट की थी। इसके बाद ओमप्रआर शीट में हेरफेर करके उसे 14वीं जेपीएससी पीटी में उत्तीर्ण कराया गया था। गिरफ्तारी के बाद बुद्धेश्वर भगत ने 11 अभ्यर्थियों की जानकारी दी थी, जिसके बाद से ही सभी सीआईडी की रडार पर थे। बुद्धेश्वर ने जेपीएससी की 14वीं प्रारंभिक परीक्षा पास कराने के एवज में उन सभी अभ्यर्थियों से 10-10 लाख रुपये यानी कुल एक करोड़ 10 लाख रुपये लिए थे। जिन अभ्यर्थियों से बुद्धेश्वर ने रुपये लिए थे, उनमें कपिल कुमार महतो, संतोष कुमार, वंदना कुमारी,

दिलीप कुमार राणा, ओमप्रकाश राणा, शिवम सिंह, पवन कुमार मुंडा, राकी सचिन लकड़, रोशन केरकेट्टा व उमांकल उरांव शामिल थे। केस में रोशन केरकेट्टा व उमाकांत उरांव की गिरफ्तारी पूर्व में हो चुकी है और सीआईडी इनका बयान भी ले चुकी है। सीजीएल पर लौक केस में सीआईडी ने पूर्व में गिरफ्तार हो चुके एजेंट दिलीप पासवान को तीन दिनों की रिमांड पर लिया है। दिलीप को सीआईडी ने 14 सितंबर को परिचम बंगाल के वर्धमान जिले से गिरफ्तार किया था। वहीं, सीआईडी ने शनिवार को 20 सफल अभ्यर्थियों से

भी पूछताछ की। सीआईडी की जांच में यह बात सामने आई है कि दिलीप ने सीजीएल परीक्षा के पूर्व आसनखोल के एक होटल में अभ्यर्थियों को उदहारण प्रश्नोत्तर रटवाए थे। प्रारंभिक पूछताछ में दिलीप ने दो लोगों के नाम भी बताए हैं, जिसके जरिए उसे सीजीएल परीक्षा में आने वाले प्रश्न व उनके उत्तर उपलब्ध हुए थे। जानकारी के मुताबिक, तकरीबन एक दर्जन सफल अभ्यर्थियों ने दिलीप के बारे में पूछताछ में जानकारी दी थी। ऐसे वसूली को लेकर उसके खिलाफ साक्ष्य भी मिले हैं। दिलीप के खिलाफ बरामद साक्ष्यों के आधार

पर उससे आगे की पूछताछ की जा रही है।ओएमआर में हेरफेर कर 14वीं जेपीएससी पीटी में हुए थे प गिरफ्तारी के बाद बुद्धेश्वर भगत ने किया था खुलासा

